सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 15 ▪ ▪ अंक : 6 ▪ ▪ 5 सितम्बर 2018 ▪ ▪ मूल्य : 20रु. ▪

खरतर सहस्राब्दी वर्ष

दुर्लभ महाराजा की राजसभा-पाटण

वि.सं. १०७५-२०७५

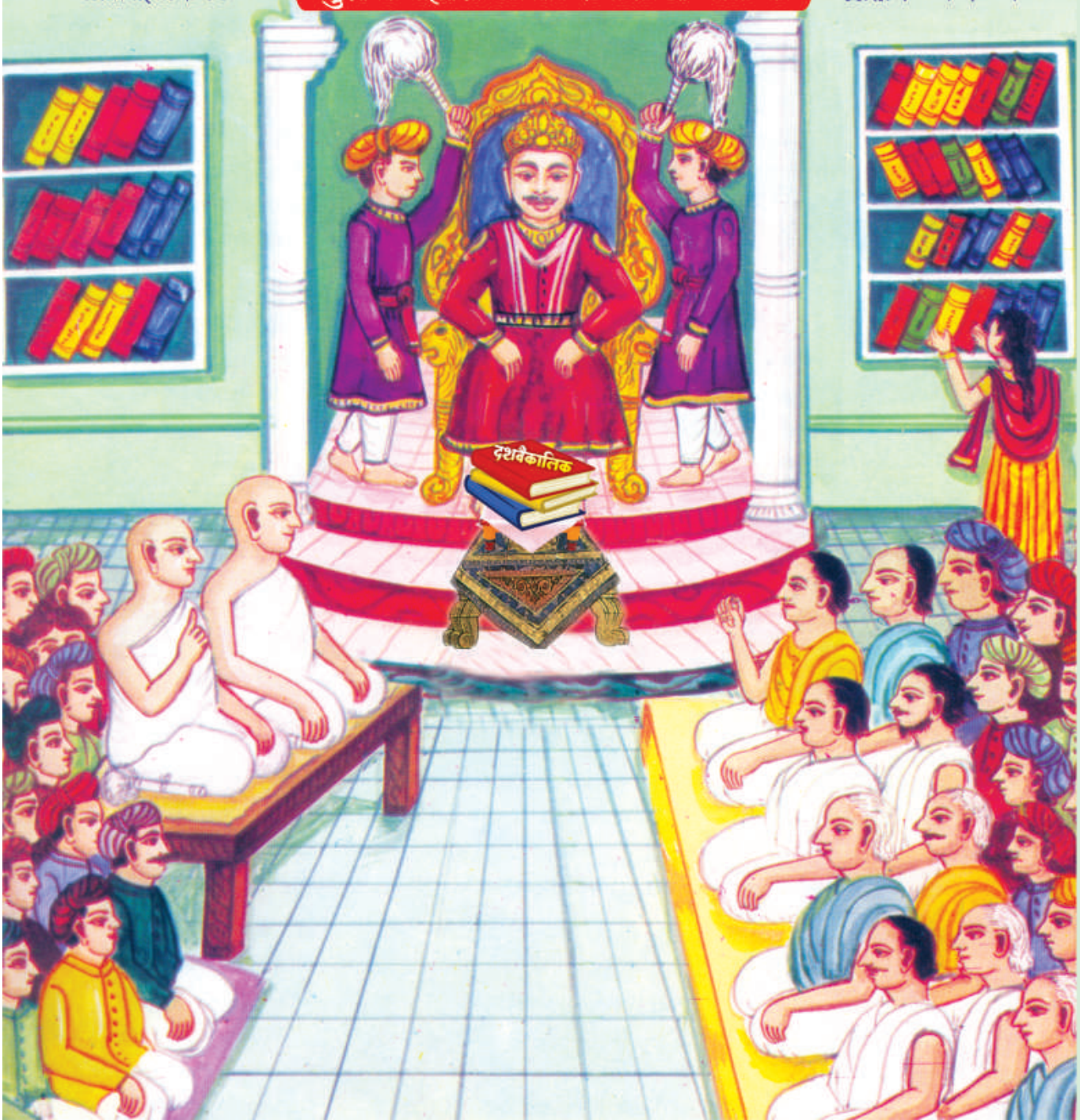

हार्दिक शुभेच्छा

मरुधर रत्न, भैरव भक्त, जीवदयाप्रेमी, समाज गौरव

श्री अमृतलालजी कटारिया सिंघवी के

श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, मुंबई

के सर्वसम्मति से अध्यक्ष बनने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ

संघवी अमृतलाल पुखराजजी कटारिया

संरक्षक	: श्री नाकोड़ा तीर्थ पूर्णिमा पदयात्रा संघ भैरव सेवा समिति-बालोतरा, मुंबई
संस्थापक अध्यक्ष	: श्री समस्त जैन कटारिया एवं कटारिया संघवी फाउण्डेशन, मुंबई
उपाध्यक्ष	: श्री आर्य गुण गुरूकृपा जैन तीर्थ रामजी का गोल-बाड़मेर (राज.)
पूर्व उपाध्यक्ष	: श्री बालोतरा जसोल प्रवासी संघ (रजि.), मुंबई
उपाध्यक्ष	: श्री बालोतरा प्रगति मंडल, मुंबई
फाउण्डर	: ऑल इण्डिया कटारिया फाउण्डेशन
प्रतिष्ठान	: महाभैरव मेटल इण्डस्ट्रीज-मुंबई

शुभेच्छु

बालोतरा (राज.) निवासी पुखराज, देवीचंद, अनराज, भगवानचंद, मोहनलाल, अशोककुमार रमेशकुमार, मदनलाल, अशोककुमार, मुकेशकुमार, हीरालाल, ललितकुमार, मुकेशकुमार, अरविंदकुमार, मनीषकुमार, दिलीपकुमार, किर्तीकुमार, दीपककुमार, आकाश, ऋषभ निखिल, रोहित, स्मित, मोहित, मोक्ष, ईशान, जनक, रिद्म, लवेश, जेनिश, रयांश, युवराज, अक्ष बेटा-पोता हुकमीचंदजी मगनीरामजी समस्त कटारिया संघवी परिवार (गादेवीवाला)

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा।
एयं मग्गमणुप्पत्ता जीवा गच्छंति सोग्गइं।।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप-इस मार्ग पर चलने वाले जीव सुगति को प्राप्त करते हैं।

Human beings who are on the path of knowledge, Faith, Character and Penance are on the path of true destiny.

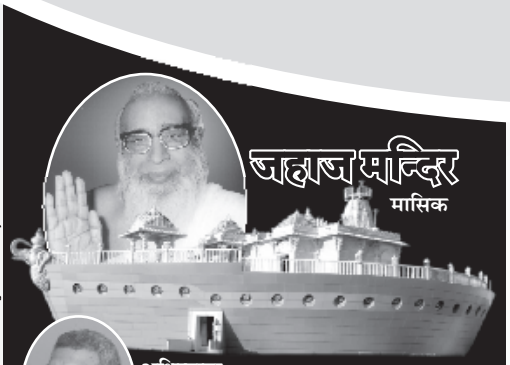

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 15 अंक : 6 5 सितम्बर 2018 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	05
3. खरतर बिरुद प्राप्ति का कालखंड	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.	07
4. कल, आज और कल	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	13
5. विधिमार्ग प्रकाशक जिनेश्वरसूरि और उनकी विशिष्ट परम्परा	मुनि जिनविजयजी	15
6. प्रेरक कहानी	प्रस्तुति कैलाश संकलेचा	21
7. समाचार दर्शन	संकलन	22
8. वर्ग पहेली 121	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	45
9. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	46

पूज्य गुरूदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के द्वारा सूरिमंत्र की तृतीय पीठिका की साधना दि. 4 अक्टुबर से 28 अक्टुबर तक होगी।

साधना के दौरान दर्शन-वार्ता आदि संभव नहीं होंगे।

महामांगलिक दि. 28 अक्टुबर को प्रातः नौ बजे होगी। महामांगलिक में सभी अवश्य पधारें।

अपनों से निवेदन

खरतरगच्छ सहस्राब्दी गौरव वर्ष गतिमान है। इससे संबंधित/संदर्भित आलेख, कविता आदि प्रकाशन योग्य सामग्री एवं जिनशासन संबंधित समाचार कृपया प्रकाशन हेतु अवश्य प्रेषित करें।

निवेदन है कि मेल आदि से निबंध, समाचार आदि हर महिने की 28 तारिख तक कार्यालय को प्राप्त हो जाय, इस तरह अवश्य भिजवायें।

Jahajmandir99@gmail.com

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई से संपर्क करावें। मो. 094447 11097

नवप्रभात

क्षितिज पर बने इन्द्रधनुष की छटा देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। मन करता है, देखता ही रहूँ।

बगीचे की क्यारियों में खिली फुलवारी मन को आकृष्ट करती है। मन करता है, इन्हें निहारता ही रहूँ।

पर्वत के बीच कल-कल बहता झरणा मेरे मन को अपनी ओर खींच लेता है। मन करता है, इसमें डुबकी लगाता ही रहूँ।

जंगल की हरियाली के मध्य नाच रहा मयूर मेरी आंखों में अंजन की तरह बस जाता है। मन करता है, इसे अपलक देखता रहूँ।

कोयल की कलरव मन को प्रमुदित करती है।

सूर्योदय का सौन्दर्य मन को मोह लेता है।

एकान्त और शान्त वातावरण में बहने वाली ठंडी, मीठी बयार मन को मदहोश करती है।

प्रकृति की इस अद्‌भुत लीला को मैं अपनी पलकें झपकाये बिना देखता ही रह जाता हूँ।

और तभी परमात्मा महावीर की वाणी मेरे कर्ण-कुहरों से टकराती है-

तूं दृश्य में उलझा है, जो क्षणिक है! कुछ पलों के बाद इन्द्रधनुषी छटा बिखर जायेगी।

कुछ पलों के बाद मयूर अपने पंख समेट लेगा।

कुछ पलों के बाद सूर्योदय का सौन्दर्य से परिपूर्ण यह नजारा कड़ी धूप में बदल जायेगा।

कुछ पलों के बाद बगीचे में खिला नवरंगा पुष्प मुरझा जायेगा।

सोच और चिन्तन कर! दृश्य महत्वपूर्ण है या द्रष्टा!

दृश्य अस्थायी है। द्रष्टा स्थायी है।

द्रष्टा है तो दृश्य है। द्रष्टा के अभाव में दृश्य का कोई मूल्य नहीं है।

तूं आंखें खोल कर दृश्य को देख रहा है। अब प्रयत्न कर और आंखें बन्द कर द्रष्टा को देखने का पुरुषार्थ कर! वही तेरा अस्तित्व है। वही तेरा असली स्वरूप है। वही तेरी मंजिल है। वही तेरा विश्राम है।

सोलह सतियाँ
कथानक
6

विलक्षण वैराग्यवती सती सुन्दरी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे...)

वे सभी उन्हीं पाँवों रत्न कम्बल और गोशीर्ष चन्दन की खोज के लिये चल पड़े। गली-गली की हर दुकान पर पहुँचे, पर उन्हें निराशा ही हाथ लगी । पर हिम्मत और हौंसला न हारते हुए उन्होंने अपनी खोज जारी रखी, आखिर उनकी मेहनत रंग लायी। एक दुकान पर काम्य वस्तुएँ प्राप्त हो गयी पर मुनिवर को क्रीत दोष न लगे, इस बात का भी ध्यान रखना था। अन्यथा खरीदने के लिये उनके पास धन की कोई कमी नहीं थी।

मुसीबत यह थी कि वह विक्रेता बिना मूल्य देने के लिये तैयार नहीं हुआ। श्रद्धा और संकल्प भाव से पाँचों मित्र अपना धर्म बजाते रहे।

अरे भैया! तुम्हारी वस्तु मुनि की सेवा में काम आये, तेरा इससे ज्यादा पुण्य और क्या हो सकता है। सेवा जैसा गहन धर्म योगियों को भी नहीं मिलता। इस अवसर को चूक मत। ये मौका पुनः मिलेगा, जरूरी नहीं।

दाता का हृदय श्रद्धा ये छलक उठा। अहा! मेरा पुण्य वास्तव में निराला है। सहर्ष ये वस्तुएँ तुम्हें देने के लिये मैं तैयार हूँ।

अब भी एक प्रश्न शेष था क्योंकि भिक्षाचर्या और उनकी वेयावच्च, ये दोनों कार्य किसी मुनि के माध्यम से ही हो सकते थे।

वे तुरन्त समीपस्थ उपाश्रय में पहुँचे। वहाँ मुनिवर बिराजमान थे। उन्हें वस्तु-स्थिति निवेदित की। वेयावच्च का अलौकिक लाभ मुनिश्री जानते थे। वे तत्काल उनके साथ चल पड़े। सबसे पहले उन्होंने उस दुकान पर बहुमूल्य पदार्थों की याचना की। उस वणिक् ने अत्यन्त श्रद्धा-भाव से वस्तुएँ प्रदान की।

वहाँ से वे रूग्ण मुनि के पास पहुँचे और सेवा शुरू कर दी।

सर्वप्रथम रूग्ण मुनि के शरीर पर लक्षपाक तेल लगाया और रत्न कम्बल ओढ़ा दिया। चिकित्सा का चमत्कार तो होना ही था। चर्म में जितने कुष्ठ रोग के कीटाणु थे, तेल की उष्णता से बाहर आकर कम्बल से चिपक गये। उन सबको एक तरफ निरवद्य भूमि पर ले जाकर अलग कर दिया। तेल की गर्मी को दूर करने के लिये गोशीर्षचन्दन का लेप कर दिया। इस प्रक्रिया से पहले ही दिन आधी व्याधि समाप्त हो गयी।

दूसरे दिन भी यही प्रक्रिया अपनायी गयी, जिससे मांसगत कीटाणु बाहर आ गये। तीसरे दिन की चिकित्सा से अस्थिगत जीवाणु विदा हो गये, इस प्रकार तीन दिन में मुनि की काया परिपूर्ण स्वस्थ हो गयी।

मुनिवर ने छहों मित्रों को धर्म का उपदेश दिया।

उनकी सौम्य मुद्रा....।

सहज सुन्दर दर्शन....।

उत्तम समता की साधना....।

छहों मित्र प्रभावित हुए बिना न रहे। अब तो वे इतने प्रभावित हो गये कि प्रतिदिन उनके आभावलय में पहुँचकर जीवन-दर्शन से लाभान्वित होने लगे। श्रद्धा और प्रेम ने उन्हें बहुत करीब लाकर खड़ा कर दिया।

विविध प्रसंगों पर प्रतिदिन चल रही चर्चा एक दिन मुनि के अतीत पर आकर रूक गयी।

वत्स ! मैं पृथ्वीतिलकपुर के अधिपति पृथ्वीपाल राजा का पुत्र हूँ। मेरा नाम गुणाकर था।

गुरु-मुख से मैंने जाना कि यह शरीर क्षणभंगुर है। सारे सुख पानी के बुलबुले के समान अस्थिर हैं।

वैराग्य जगा, भावनाएँ प्रबल बनी और दीक्षा लेकर

तपोमय जीवन जीने लगा। पूर्वकर्मोदयवशात् नीरस और रूक्ष आहार लेने से कुष्ठ रोग हो गया।

उपचार किये पर रोगोपशमन नहीं हुआ। आखिर गुर्वाज्ञा लेकर संलेखना व्रत धारा और समाधिपूर्वक शरीर-त्याग के लक्ष्य से यहाँ आत्मस्थ हो गया।

शनैः शनैः अशाता वेदनीय कर्म का प्रभाव कम हुआ। तुम्हारा संयोग मिला और आज मैं परम शाता में हूँ।

देखो! यह संसार जन्म-मरण की पीड़ाओं से भरा है। न रहने योग्य है, न भोगने योग्य है ये कर्मों से भरी दुनिया। जितना जल्दी हो, इसे त्याग कर जन से जिनपति बन जाओ। तुम मेरे बाह्य रोग मुक्ति में निमित्त बने, मैं आन्तरिक रोग-मुक्ति हेतु सहायक बनना चाहता हूँ। देशना क्या थी जैसे अमृत का दिव्य झरणा। उस अमीवर्षा में चारित्र-मोहनीय के पाप धुल गये और आत्मा चारित्र के शृंगार से सज गयी।

संयम का निरतिचार परिपालन करते हुए छहों मित्र द्वादशम देवलोक में देव बने।

वहाँ से च्यवकर महाविदेह क्षेत्र की पुष्कलावती विजय में उत्पन्न हुए। पूर्वभव की प्रीति के कारण पाँच मित्र राजा वज्रसेन के घर उत्पन्न हुए। उनका नाम रखा गया व्रजनाभ, बाहु, सुबाहु, पीठ एवं महापीठ। केशव ने अन्य राजा के घर जन्म लेकर सुयश नाम पाया।

पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण उनमें प्रगाढ़ प्रीति का भाव जगा। वे हिलमिलकर स्नेह की पौध का संवर्द्धन करते रहे। इधर ढलते जीवन के संध्याकाल में महाराजा वज्रसेन की आत्मा में वैराग्य के बीज अंकुरित हुए।

राजपाट त्यागा.....संसार से मुख मोड़ा और घोर-कठोर संयम साधना से विपुल कर्म निर्जरा करने लगे। चारों घाती कर्मों का सर्वथा क्षय कर तीर्थंकरत्व को उपलब्ध हुए।

भूतल को परम पावन करते हुए तीर्थंकर वज्रसेन स्वामी पुण्डरिकगिणी नगरी में पहुँचे।

देशना सुनने के लिये छहों मित्र समवसरण में पहुँचे। पहली देशना ही उनके जागरण की उद्घोषणा बन गयी। छहों मित्रों ने वंदना कर विनंती की-प्रभो! आपके मुखारविन्द से झरती अमृत की सुगंध को पाकर हम धन्य-धन्य हो गये हैं। हम आपकी अमृतमयी सन्निधि में आत्म-शान्ति की निधि पाना चाहते हैं। हमें दीक्षा देकर उपकृत करें।

वत्स! तुम्हारी भावनाएँ अत्युत्तम हैं। शुभस्य शीघ्रम् ! प्रभु ने छहों मित्रों को दीक्षित कर दिया।

वे अपनी अर्हता, रुचि और प्रज्ञा के अनुरूप अपने-अपने संयम-क्षेत्र में गति पकड़ने लगे।

मुनि वज्रनाभ का प्रशासनिक-कौशल अनुपम था। वे संघ के नायक ही नहीं, स्वयं के उन्नायक भी बने। संघ-प्रभावना, आत्म-साधना और तपाराधना से महान् कर्म-निर्जरा कर उन्होंने तीर्थंकर नाम कर्म का पुण्योपार्जन किया और तीसरे भव में ऋषभदेव के रूप में इस धरा को धर्म से आलोकित किया। मुनि केशव की संयम-साधना भी कोई कम प्रशंसनीय नहीं थी। वे आयुष्य पूर्ण कर ऋषभ के घर पर पौत्र के रूप में उत्पन्न हुए और अक्षय तृतीया को दादा ऋषभ मुनि को इक्षुरस दान देकर श्रेयांसकुमार के रूप में प्रसिद्ध हुए।

बाहु-सुबाहु, दोनों ने अपने आपको विशेष रूप से वेयावच्च की साधना में संयोजित किया। किसी ग्लान, तपस्वी को देखा नहीं और उनकी सेवा-सुश्रुषा में उपस्थित हुए नहीं। शिरोवेदना, उदर वेदना, किसी भी शारीरिक व्याधि में समाधि प्रदान करने में उनकी प्रसन्नता कई गुणा बढ़ जाती। उनकी आत्मा इतनी अधिक वेयावच्च प्रेमी बनी कि लघुनीति, बड़ीनीति परठने में भी कोई संकोच अथवा घृणा का भाव नहीं आता।

तपस्वी के तप के प्रति अहोभाव!

आचार्य की अनुपम सेवा-साधना!

उपाध्याय के श्रुत के प्रति आदर-भाव!

स्वाध्यायी मुनि के प्रति उछलती प्रेम-धारा !

(क्रमशः)

खरतर
सहस्राब्दी
गौरव वर्ष

खरतर बिरुद प्राप्ति का कालखंड

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

खरतरगच्छ का उद्भव कब हुआ, यह प्रश्न इन दिनों चर्चा का विषय बना हुआ है।

इतिहास में बहुत शोध करनी होती है। तथ्य निकालने होते हैं। उस समय की स्थिति, परिस्थिति, प्राप्त प्रामाणिक इतिवृत्त आदि का तटस्थता के साथ आकलन करके ही यथार्थता का पता लगाया जा सकता है।

यह घटना कोई आज की नहीं है। एक हजार वर्ष पूर्व घटी घटना है।

इतिहास की विषय–वस्तु पर चर्चा करने से पूर्व अपने चित्त को पूर्वाग्रह से दूर करना होता है। विरोध की मानसिकता से सत्य–तथ्य फलित नहीं हो सकता। अपने विचारों को नम्रता के साथ प्रस्तुत करना होता है।

हम ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर चिन्तन करें कि काल–खण्ड के कौन–से अंश में यह घटना घटी होगी!

यह घटना उस कालखंड का हिस्सा थी, जिस कालखण्ड में चैत्यवासियों के अत्यधिक प्रचलन से वसति मार्ग प्रायः बन्द हो गया था। ऐसे समय आचार्य वर्द्धमानसूरि जिनेश्वरसूरि हुए, जिन्होंने आगम–स्वाध्याय के परिणाम–स्वरूप वसति मार्ग की प्रतिष्ठा के लिये कटिबद्ध थे।

दादा जिनदत्तसूरि ने गुरु पारतंत्र्य स्तोत्र में इस घटना को इस प्रकार लिखा है–

पुरओ दुल्लह महिवल्लहस्स
अणहिल्लवाडए पयवं।
मुक्काविआरिउणं सीहेण व
दव्वलिंगि गया।।10।।

पाटण अधिपति दुर्लभराज के समक्ष आचार्य जिनेश्वरसूरि की सिंह गर्जना से चैत्यवासी पाटण से प्रस्थान कर गये।

चल रहे उस परिवेश को सर्वथा बदलने वाली यह क्रान्तिकारी घटना विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में घटी, इस मान्यता में किसी प्रकार का संशय नहीं है। संवत् के संदर्भ में विचार–मंथन करना है।

खरतरगच्छ की सबसे प्राचीन पट्टावली कवि पल्ह ने विक्रम की बारहवीं शताब्दी में जिनदत्तसूरि की स्तुति के रूप में लिखी है। इसका लेखन दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरि के समय में हुआ है। जैसलमेर के भंडार स्थित यह ताडपत्रीय प्रति वि. सं. 1170 में दादा जिनदत्तसूरि के शिष्य जिनरक्षित मुनि द्वारा धारा नगरी में लिखी गई है। एक दूसरी प्रति 1171 में पाटण नगर में दादा जिनदत्तसूरि के शिष्य ब्रह्मचंद्र गणी द्वारा लिखी गई है।

इस स्तुति रूप पट्टावली में स्पष्टतः लिखा है कि आचार्य वर्द्धमानसूरि और आचार्य जिनेश्वरसूरि को खरतर वर प्रदान किया गया–

देवसूरि पहु नेमिचंदु बहु गुणिहिं पसिद्धउ।
उज्जोयणु तह वद्धमाणु खरतर वर लद्धउ।।
सुगुरु जिणेसरसूरि नियमि जिणचंदु सुसंजमि।
अभयदेउ सव्वंगु नाणि जिणवल्लहु आगमि।।

इस स्तुति में देवसूरि से लेकर जिनदत्तसूरि का नामोल्लेख कर उनकी स्तुति की है। खरतर वर प्राप्त किया, इसका उल्लेख है। परन्तु संवत् का उल्लेख इसमें प्राप्त नहीं है।

खरतर शब्द का प्राचीनतम उपलब्ध उल्लेख यही है। इस प्रमाण से वि. सं. 1204 में खरतरगच्छ की उत्पत्ति की बात स्वतः ही अप्रामाणिक हो जाती है।

दादा जिनदत्तसूरि ने गणधर सार्धशतक नामक ग्रन्थ लिखा, जिसमें आचार्य वर्धमानसूरि, जिनेश्वरसूरि से लेकर आचार्य जिनवल्लभसूरि तक के आचार्यों का पूरा वर्णन उपस्थित किया। सूराचार्य आदि को वाद में हराने की घटना का उल्लेख करते हुए अत्यन्त आदर के साथ उन्होंने लिखा कि आचार्य जिनेश्वरसूरि से सुविहित परम्परा प्रारंभ हुई। दादा जिनदत्तसूरि बारहवीं शताब्दी के

महापुरुष थे। इस ग्रन्थ का लेखन खरतरबिरुद की घटना के मात्र 100 वर्ष बाद ही हुआ था। उन्होंने इस ग्रन्थ में संवत् आदि का उल्लेख नहीं किया।

खरतरगच्छ की सबसे प्राचीन विस्तृत पट्टावली जो खरतरगच्छ बृहद् गुर्वावली के नाम से जिनपाल उपाध्याय ने लिखी, वे आचार्य जिनपतिसूरि के शिष्य थे। विक्रम की तेरहवीं शताब्दी में इसका लेखन हुआ। उन्होंने वर्धमानसूरि, जिनेश्वरसूरि से लेकर आचार्य जिनेश्वरसूरि {द्वितीय} तक का वर्णन इस ग्रन्थ में किया है।

यह अचरज की बात है कि उन्होंने दुर्लभ राजा के समक्ष हुए इस चर्चा का वर्णन तो विस्तार से किया है, पर संवत् का उल्लेख उन्होंने नहीं किया है।

प्रश्न होता है कि जब उन्होंने हर छोटी घटना का उल्लेख भी संवत्, मास, तिथि के साथ किया है तो इतनी बडी क्रान्तिकारी घटना का वर्णन करते समय संवत्, मास, तिथि का उल्लेख क्यों नहीं किया।

इस प्रश्न के उत्तर में महोपाध्याय विनयसागर जी लिखते हैं–

अर्वाचीन पट्टावलिकारों ने पट्टावलियों में कहीं 1080 सम्वत् का उल्लेख किया है तो किसी ने 1024 का! यह वस्तुतः श्रवण परम्परा पर आधारित है। इसको आधार मानकर कुछ लोग समय के विषय में निरर्थक ही विवाद उपस्थित करते हैं। इस सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त है कि युगप्रधान जिनदत्तसूरि, जिनपालोपाध्याय, सुमतिगणि, प्रभावकचरितकार आदि मौन हैं। इसका कारण भी यही है कि सब ही प्रबन्धकारों ने जनश्रुति, गीतार्थश्रुति के आधार से प्रबन्ध लिखे हैं और वे भी सब 100 और 250 वर्ष के मध्य काल में। वस्तुतः समग्र लेखकों ने संवत् के सम्बन्ध में मौन धारण कर ऐतिह्यता की रक्षा की है अन्यथा संवत् के उल्लेख में असावधानी होना सहज संभाव्य था। महाराजा दुर्लभराज का राज्यकाल 1066 से 1078 माना जाता है, उसी के मध्य में यह घटना हुई है।'

–महोपाध्याय विनयसागर, खरतरगच्छ का बृहद् इतिहास, भूमिका पृष्ठ 30

खरतरबिरुद प्राप्ति के संवत् का उल्लेख सतरहवीं शताब्दी में रचे गये ग्रन्थों में मिलना प्रारंभ होता है। उसके पहले के ग्रन्थों में खरतर बिरुद मिला, दुर्लभ राजा द्वारा मिला, यह सब वर्णन तो मिलता है, पर संवत् का उल्लेख इससे पूर्व का नहीं मिलता।

इससे यह सिद्ध होता है कि संवत् का यह उल्लेख कर्णोपकर्ण पर आधारित था। इतने लम्बे समय बाद हो रहे उल्लेख में दो–चार वर्षों का अन्तर आना स्वाभाविक है। इस संदर्भ में दो उल्लेख मिलते हैं– एक 1024 का और दूसरा 1080 का! प्रमाणों से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि 1080 का उल्लेख सत्य के निकट है।

अब हम इस विषय पर विचार करें कि यह घटना कब घटित हुई होगी! उस समय का कोई प्रमाण हमारे पास उपलब्ध नहीं है। जो भी प्रमाण उपलब्ध हैं, वे सभी घटना के 600 वर्षों के सुदीर्घ अन्तराल के बाद के हैं। जैसा कि पूर्व में कहा गया, उन्होंने इस संवत् का उल्लेख श्रवण परम्परा के आधार पर किया है।

विपुल संख्या में प्राप्त प्रमाणों से यह तो अत्यन्त स्पष्ट हो जाता है कि दुर्लभराजा की सभा में आचार्य जिनेश्वरसूरि का चैत्यवासियों के साथ शास्त्रार्थ हुआ था और वे इसमें विजयी घोषित हुए थे और उस समय से ही वसति वास की परम्परा पुनः प्रतिष्ठित हुई थी।

युगप्रधान दादा जिनदत्तसूरि ने स्वप्रणीत गणधर सार्द्धशतक, सुगुरुपारतंत्र्यस्तव, सुगुरुगुणस्तव सप्ततिका आदि में स्पष्ट रूप से इस घटना का उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि अणहिलपुर पाटण में महाराजा दुर्लभराज की राज्यसभा में साध्वाचार को लेकर शास्त्रार्थ हुआ और इस विजय के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण गुर्जर धरा में वसतिवास का प्रचार हुआ।

श्री सुमतिगणी ने गणधरसार्द्धशतक बृहद्वृत्ति में शतक की गाथाओं की विवेचना में इस शास्त्रार्थ का विस्तार से वर्णन किया है।

वि. 1305 में रचित खरतरगच्छ बृहद् गुर्वावली नामक प्रबन्ध में जिनपालोपाध्याय ने इस घटना का सांगोपांग वर्णन प्रस्तुत किया है।

श्री प्रभाचन्द्रसूरि ने प्रभावक चरित के अन्तर्गत आचार्य अभयदेवसूरि के चरित्र में पद्य 44 से 89 तक के वर्णन में इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि पाटण में शास्त्रार्थ हुआ और उसके बाद समस्त गुजरात

में वसतिवास की परम्परा स्थापित हुई।

वि. सं. 1080 को स्वीकार करने में दुर्लभराजा की उपस्थिति के संदर्भ में एक समस्या उपस्थित होती है। आचार्य मेरुतुंगसूरि ने विचार श्रेणी की स्थविरावली एवं राजावली कोष्ठक में स्पष्टतः यह उल्लेख किया है कि दुर्लभराज ने वि. 1066 से 1078 तक पाटण पर शासन किया था।

सभी प्रामाणिक इतिहासकार इस विषय में एकमत है। इसलिये प्रश्न होता है कि जब 1080 में दुर्लभराजा थे ही नहीं, तब शास्त्रार्थ किसकी अध्यक्षता में हुआ!

1080 को स्वीकार करने में शास्त्रार्थ की घटना पर ही प्रश्नचिह्न लग जाता है। बीते कुछ वर्षों में इस विषय में खरतरगच्छ के इतिहास को विशेष रूप से परिश्रम पूर्वक प्रकाशित/प्रचारित/प्रसारित करने वाले सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्री अगरचंदजी नाहटा, श्री भंवरलालजी नाहटा एवं महोपाध्याय श्री विनयसागरजी ने शोध पूर्वक प्रचुर परिश्रम किया था।

सुप्रसिद्ध इतिहासविद् श्री अगरचंदजी नाहटा के मतानुसार वि. 1080 के स्थान पर वि. 1066 या 1070 में शास्त्रार्थ की यह घटना घटी थी। मेरे संग्रह में आचार्य भगवंत श्री जिनहरिसागर सूरिजी म. के नाम श्री अगरचंदजी नाहटा द्वारा लिखा हुआ एक पत्र है। इस पत्र में उन्होंने खरतर बिरुद प्राप्ति के काल के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि उस समय की राजनैतिक परिस्थिति आदि के आधार पर यह स्वीकार किया जाना चाहिये कि यह घटना 1080 में नहीं अपितु 1066 में घटी है।

उन्होंने वि. सं. 2016 में प्रकाशित खरतरगच्छ का इतिहास प्रथम भाग नामक ग्रन्थ के एक आलेख में वि. सं. 1070 में शास्त्रार्थ होना प्रमाणित किया है।

महोपाध्याय श्री विनयसागरजी ने इस विषय में बहुत शोध की है। उन्होंने अपने शोध प्रबन्ध 'वल्लभ भारती' नामक ग्रन्थ में प्रचुर ऊहापोह किया है। उनके मतानुसार वि. 1078 से पूर्व की यह घटना है।

महोपाध्याय विनयसागरजी द्वारा लिखित खरतरगच्छ का बृहद् इतिहास नामक ग्रन्थ में पृष्ठ 13 पर लिखा है कि दुर्लभराज का शासन वि. सं. 1076 तक ही रहा और उत्तरकालीन पट्टावलियॉ जो गीतार्थ परम्परा पर ही आधारित है, यदि उनमें दो चार वर्ष का अन्तर है तो यह सामान्य बात ही है।

मुनि चन्द्रप्रभसागरजी द्वारा लिखित खरतरगच्छ का आदिकालीन इतिहास नामक ग्रन्थ में भी उन्होंने इसी मत का समर्थन किया है।

आचार्य जिनकृपाचन्द्रसूरि समुदाय के सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ मुनि श्री कान्तिसागरजी म. ने शत्रुंजय वैभव नामक ग्रन्थ में खरा बिरुद प्राप्त करने का संवत् 1078 निश्चित किया है।

पुरातत्व के सुप्रसिद्ध विद्वान् पद्मश्री विभूषित मुनि जिनविजयजी ने आचार्य जिनेश्वरसूरि रचित कथाकोष प्रकरण की विस्तृत भूमिका में इस विषय पर शोधपरक विवेचन किया है।

उन्होंने लिखा है–

पिछली पट्टावलियों में वाद–विवाद का संवत् दो तरह का लिखा हुआ मिलता है। एक है वि. सं. 1024 और दूसरा है 1080! इसमें 1024 का उल्लेख तो सर्वथा भ्रान्त है क्योंकि उस समय पाटण में तो दुर्लभराज के पितामह मूलराज का राज्य था। शायद दुर्लभराज का तो उस समय जन्म भी नहीं हुआ था।

दूसरा, जो 1080 संवत् का उल्लेख है, वह भी ठीक नहीं है क्योंकि निश्चित ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर यह स्थिर हुआ है कि दुर्लभराज की मृत्यु सं. 1078 में हो चुकी थी।

प्रबन्ध चिंतामणि, कुमारपाल प्रबंध, विचार श्रेणी आदि ऐतिहासिक ग्रन्थों के अनुसार दुर्लभराजा ने वि. 1066 से 1078 तक साढे ग्यारह वर्ष तक पाटण पर राज्य किया था। उसके बाद उनके पुत्र भीमसेन गद्दी पर बैठा। 1080 में तो उनके पुत्र भीमदेव का राज्य प्रवर्तमान था।

तपागच्छीय इतिहासवेत्ता मुनि श्री कल्याणविजय जी म. ने पट्टावली पराग संग्रह नामक ग्रन्थ में उन्होंने यह तो स्वीकार किया है कि पाटण में वर्द्धमानसूरि अथवा जिनेश्वरसूरि से चैत्यवासी पराजित हुए परन्तु वि. सं. 1080 में इस घटना के घटित होने के उल्लेख को अविश्वसनीय ठहराते है। वे लिखते हैं– दुर्लभसेन का काल चालुक्य राजाओं की वंशावली के उल्लेखानुसार वि. सं. 1066 से 1078 तक ही रहा। तदनुसार वि. सं. 1080

में दुर्लभसेन की सभा में जिनेश्वरसूरि का शास्त्रार्थ कैसे संभव हो सकता है।

प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी की शिष्या साध्वी श्री मनोहरश्रीजी की शिष्या साध्वी डॉ. स्मितप्रज्ञाश्रीजी ने दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि शोध प्रबन्ध में गुजरातनो प्राचीन इतिहास नामक ऐतिहासिक प्रामाणिक ग्रन्थ के आधार से लिखा है–

दुर्लभराज के दरबार में चैत्यवासियों को परास्त कर जिनेश्वरसूरि ने 'खरतर' बिरुद प्राप्त किया था। फलतः उनका गच्छ खरतरगच्छ कहलाया।

दुर्लभराज के बाद भीमदेव प्रथम ईस्वी सन् 1022 अर्थात् वि.सं. 1078 में गादी पर आया।

–युगप्रधान आचार्य श्री जिनदत्तसूरि का
जैनधर्म एवं साहित्य में योगदान
लेखिका–डॉ. स्मितप्रज्ञाश्री, पृष्ठ 3

भगवान महावीर के केवलज्ञान कल्याणक तीर्थ श्री ऋजुबालिका में विदुषी साध्वी मणिप्रभाश्रीजी की प्रेरणा से बने जिनमंदिर में प्रतिष्ठा की जो प्रशस्ति अंकित है, उसमें वि.सं. 1074 में खरतर बिरुद प्राप्ति का वर्णन है।

सं. 1080 में आचार्यश्री का जालोर होना–

आचार्य जिनेश्वरसूरि व आचार्य बुद्धिसागरसूरि दोनों भ्राता थे। दोनों सहोदर भी थे और गुरु बन्धु भी! अतः अपने शिष्यों के साथ दोनों साथ ही विचरण करते थे।

वि. सं. 1080 का चातुर्मास आचार्य जिनेश्वरसूरि व बुद्धिसागरसूरि का जालोर नगर में था। उस चातुर्मास व शेष काल में आचार्य जिनेश्वरसूरि ने हारिभद्रीय अष्टक टीका ग्रन्थ व प्रमालक्ष्म आदि ग्रन्थों की रचना की। तो उसी वर्ष जालोर में ही आचार्य बुद्धिसागरसूरि ने स्वोपज्ञ पंचग्रन्थी नामक संस्कृत व्याकरण की रचना की थी। इस व्याकरण की प्रशस्ति में उन्होंने अपने बडे गुरुभ्राता आचार्य जिनेश्वरसूरि की प्रशंसा करते हुए जालोर नगर व वि. सं. 1080 का उल्लेख निम्न छंदों में किया है–

यदि मदिकृतिकल्पोऽनर्थधीर्मत्सरी वा,
कथमपि सदुपायैः शक्यते नोपकर्तुम्।
तदपि भवति पुण्यं
स्वाशयस्यानुकूल्ये,
पिबति सति यथेष्टं श्रोत्रियादौ
प्रपायाम् ।।9।।
अम्भोनिधिं समवगाह्य समाप लक्ष्मीं
चेद्वामनोऽपि पृथिवीं च पदत्रयेण।
श्रीबुद्धिसागरममुं त्ववगाह्य कोट्यो,
व्याप्नोति तेन जगतोऽपि पदद्वयेन ।।10।।
श्रीविक्रमादित्यनरेन्द्रकालात् साशीतिके
याति समासहस्रे {1080}।
सश्रीक**जाबालिपुरे** तदाद्यं दृब्धं मया सप्तसहस्रकल्पम्
।।11।। ।।छ।।

।।इति श्री बुद्धिसागराचार्यविरचितं **पञ्चग्रन्थी व्याकरणं** समाप्तम्।। दिल्ली से सन् 2005 में प्रकाशित

आचार्य जिनेश्वरसूरि ने जालोर में ही वि. सं. 1080 में हारिभद्रीय अष्टक ग्रन्थ की टीका लिखी थी। उसकी प्रशस्ति में भी जालोर व वि. संवत् 1080 का स्पष्ट उल्लेख किया है–

जिनेश्वरानुग्रहतोऽष्टकानां,
विविच्य गम्भीरमपीममर्थम् ।
अवाप्य सम्यक्त्वमपेतरेकं,
सदैव लोकाश्चरणे यतध्वम् ।।1।।
सूरेः श्रीवर्धमानस्य, निःसंबन्धविहारिणः ।
हारिचारित्रपात्रस्य, श्रीचन्द्रकुलभूषिणः ।।2।।
पादाम्भोजद्विरेफेण, श्रीजिनेश्वरसूरिणा ।
अष्टकानां कृता वृत्तिः, सत्वानुग्रहहेतवे ।।3।।
समानामधिकेऽशीत्या, सहस्रं विक्रमाद् गते{1080}।
श्रीजावालिपुरे रम्ये, वृत्तिरेषा समापिता ।।4।।
नास्त्यस्माकं वचनरचनाचातुरी नापि तादृग् ,
बोधः शास्त्रे न च विवरणं नाऽ{वाऽ}स्ति पौराणमस्य ।
किन्त्वभ्यासो भवतु भणितौ सूदितायाममुष्मात् ,
संकल्पान्नो विवरणविधावत्र जाता प्रवृत्तिः ।।5।।
प्रत्यक्षरं निरूप्यास्या, ग्रन्थमानं विनिश्चितम् ।
त्रयस्त्रिंशच्छतानि स्युः, श्लोकानां सप्ततिस्तथा ।।1।।
श्री चन्द्रकुलाम्बरभास्करश्रीजिनेश्वराचार्यकृता
तच्छिष्यश्रीमदभयदेवसूरिप्रतिसंस्कृता
अष्टकवृत्तिः समाप्ता ।।

आचार्य जिनेश्वरसूरि ने अष्टक वृत्ति की इस प्रशस्ति में स्पष्ट किया है कि वि. सं. 1080 में जालोर में यह ग्रन्थ लिखा।

आचार्य बुद्धिसागरसूरि कृत पंचग्रन्थी व्याकरण का

संशोधन आचार्य जिनेश्वरसूरि ने यहीं जालोर में वि. 1080 में ही किया था। साथ ही उसी समय आचार्य जिनेश्वरसूरि ने वहीं जालोर में प्रमालक्ष्म नामक ग्रन्थ भी रचा।

इस ग्रन्थ की प्रशस्ति में लिखा–

श्री बुद्धिसागराचार्यैवृत्तैर्व्याकरणं कृतम्। अस्माभिस्तु प्रमालक्ष्म, वृद्धिमायातु सांप्रतम्।।

अर्थात् श्री बुद्धिसागराचार्य ने व्याकरण की रचना की और हमारे द्वारा प्रमालक्ष्म की रचना संपन्न हुई।

इस श्लोक में व्याकरण का उल्लेख अकारण नहीं है। यह स्पष्ट करने के लिये है कि जिस समय बुद्धिसागराचार्य ने व्याकरण की रचना की, उसी समय प्रमालक्ष्म की रचना हुई। इस श्लोक द्वारा यह ध्वनित होता है कि दोनों रचनाऐं साथ साथ हुई।

प्रमालक्ष्म में संवत् का कोई उल्लेख नहीं है, पर व्याकरण की प्रशस्ति में समय व स्थान का स्पष्टतः उल्लेख प्राप्त होता है, जिसका वर्णन उपर किया जा चुका है।

सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्री भंवरलालजी नाहटा द्वारा तीर्थ श्री स्वर्णगिरि–जालोर नामक ग्रन्थ लिखा गया था जो प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर एवं बी. जे. नाहटा फाउण्डेशन, कोलकाता द्वारा प्रकाशित किया गया है। यह ग्रन्थ सन् 1995 में प्रकाशित है। इस ग्रन्थ के पृष्ठ 65 पर लिखा है कि आचार्य जिनेश्वरसूरि ने वि. सं. 1080 का चातुर्मास जालोर में करके चैत्यवंदनक, अष्टक प्रकरण वृत्ति आदि ग्रन्थों की रचना की।

महोपाध्याय विनयसागरजी द्वारा संपादित खरतरगच्छ साहित्य कोश में चैत्यवंदनक ग्रन्थ का आलेखन जालोर में वि. 1080 में करने का उल्लेख है।

इन प्रमाणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि शास्त्रार्थ 1080 में हुआ होगा तो कब हुआ होगा! जब चातुर्मास उनका जालोर में हो रहा है।

शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त करने के बाद वसति मार्ग का जो अनूठा और अद्‌भुत वातावरण निर्मित हुआ होगा, उसका गुजरात में प्रचार करने के बजाय वे राजस्थान की ओर विहार करके जालोर चातुर्मास करते, यह संभव नहीं है। जालोर चातुर्मास और ग्रन्थ रचना का उल्लेख कोई श्रवण परम्परा पर आधारित नहीं है, अपितु उन्होंने स्वयं स्वरचित ग्रन्थ की प्रशस्ति में लिखा है।

इन प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है कि शास्त्रार्थ 1080 से पूर्व कभी भी हुआ हो, पर 1080 में तो नहीं हुआ। क्योंकि उस वर्ष तो वे जालोर में विचरण कर रहे थे। यह यथार्थ अनुमान किया जा सकता है कि अष्टक टीका, प्रमालक्ष्म, पंचग्रन्थी व्याकरण आदि के संशोधन आदि कार्यों में कितना विपुल समय लगा होगा!

उस समय की भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर यह अनुमान भी नहीं लगा सकते कि पहले वहॉ पाटण में शास्त्रार्थ हुआ होगा और बाद में वे उसी वर्ष जालोर में आ गये होंगे।

गुजरात से राजस्थान का विहार पूर्व समय में इतना आसान नहीं था। फिर अत्यन्त शुद्धता के आग्रही उन मुनि भगवंतों के लिये सीधा विहार तो अत्यन्त दुष्कर था।

फिर गुर्वावली आदि में यह प्रमाण भी तो उपलब्ध होता है कि शास्त्रार्थ में विजयी होने के बाद उन्होंने पूरे गुजरात में विहार करके वसति वास को स्थापित किया।

आचार–शुद्धि के शास्त्र–प्रणीत विचारों को प्रचारित/प्रसारित करने के लिये निश्चित ही उस विजय के बाद तीन से चार वर्ष पर्यन्त उनका गुजरात में ही विहार होना, स्वाभाविक प्रतीत होता है।

इन सब प्रमाणों का निष्कर्ष यह है–

1. शास्त्रार्थ वि. 1080 के पूर्व हुआ।
2. दुर्लभराज का राज्य वि. 1066 से 1078 तक रहा।
3. वि. सं. 1080 में आचार्य जिनेश्वरसूरि आचार्य बुद्धिसागरसूरि आदि मुनि भगवंतों के साथ जालोर में बिराज रहे थे। उनका चातुर्मास भी वहीं था। और प्रमालक्ष्म, चैत्यवंदनक, अष्टक टीका, व्याकरण आदि विशिष्ट और क्लिष्ट ग्रन्थों की रचना वहीं पर रहकर उसी वर्ष में पूर्ण की थी।

कुछ पलों के लिये एक असत् कल्पना कर लेते हैं कि दुर्लभराजा के स्वर्गवास के संवत् में कहीं किसी के द्वारा त्रुटि हुई होगी और वे स्वयं वि. सं. 1080 में विद्यमान होंगे।

पर इस उल्लेख का क्या उत्तर

होगा कि वि. सं. 1080 में स्वयं आचार्य जिनेश्वरसूरि एवं बुद्धिसागरसूरि जालोर में थे। उनके जालोर होने का आधार किसी और ने नहीं लिखा, बल्कि स्वयं उन्होंने स्वरचित ग्रन्थ की प्रशस्ति में दिया है। संवत् और नगर का नाम स्पष्ट रूप से अंकित किया है।

इस प्रमाण से यह हस्तामलकवत् स्पष्ट हो जाता है कि शास्त्रार्थ वि. सं. 1080 में नहीं अपितु उसके पूर्व हुआ था। अब उस संवत् की गणना कैसे की जाय!

इतिहासकारों ने अलग अलग संवत् का अनुमान किया है। श्री अगरचंदजी नाहटा वि. 1066 अथवा 1070 के पक्ष में है तो विनयसागरजी के मत से यह शास्त्रार्थ 1078 से पूर्व हुआ होगा। साहित्य संशोधक व पुरातत्ववेत्ता मुनि श्री कान्तिसागरजी 1078 के पक्ष में अपनी राय प्रस्तुत करते हैं।

संवत् के संबंध में समस्त उहापोहों को समाप्त करना था। ताकि हम किसी एक संवत् को स्वीकार कर समाधान कर सकें।

इस संदर्भ में गहन विचार विमर्श वि. सं. 2040 में हुआ, जब गढसिवाना में पोल के भीतर स्थित शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी की प्रतिष्ठा के साथ साथ दादा जिनकुशलसूरि सप्तम शताब्दी महोत्सव का आयोजन था।

इस समारोह में पूज्य आचार्य जिनउदय सागरसूरिजी म., पूज्य आचार्य जिनकान्तिसा गरसूरिजी म., पू. मुनि श्री महोदयसागरजी म. पू. मुनि श्री कैलाश सागरजी म. आदि मुनि मंडल के साथ साथ समुदायाध्यक्षा श्री चंपाश्रीजी म., अविचलश्रीजी म., प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म. साध्वी श्री राजेन्द्रश्रीजी म. हेमप्रभाश्रीजी म., आदि वरिष्ठ साध्वियों की पावन उपस्थिति थी। समारोह में श्री भंवरलालजी नाहटा, श्री विनयसागरजी आदि इतिहास के विशिष्ट विद्वान् व्यक्तित्व उपस्थित थे।

उस समय इस विषय में गहन चर्चा चली थी। निर्णय करते समय इस मत का ध्यान रखा गया कि दुर्लभराजा का शासन 1076 या 1078 तक ही रहा था तथा 1080 में आचार्यद्वय जालोर में बिराजमान थे।

सभी स्पष्ट रूप से एक मत थे कि 1080 तो हो ही नहीं सकता, तब उपस्थित आचार्यश्री, मुनि मंडल, साध्वी मंडल, इतिहासज्ञों आदि ने सर्वसम्मति से खरतर बिरुद की प्राप्ति का वि. 1075 का वर्ष निश्चित किया।

इसी निर्णय के आधार पर 35 वर्ष पूर्व मेरे द्वारा रचित/निर्मित खरतर चालीसा में वि. सं. 1075 का उल्लेख किया गया था। उस समय प्रकाशित श्री जिनकुशलसूरि सप्तम शताब्दी स्मृति ग्रन्थ में यह चालीसा प्रकाशित है।

उस चालीसा जिसकी रचना वि. 2040 में चैत्र सुदि 12 को की थी। उसमें लिखा है–

अर्पण खरतर बिरुद किया है,
परकट भावोल्लास किया है।
सूरि जिनेश्वर घोषित होते,
विजयी विजयी उद्घोष प्रकटते।।25।।
संवत् सहस पचोतर वर्षे,
घटना बनी यह सब जन हर्षे।
तब से गच्छ हुआ यह खरतर,
शुभ्र सनातन सात्विक खरतर।।26।।
श्री जिनकान्तिसूरिवर राजे,
सिंहगर्जनावत् वे गाजे।
प्रज्ञापुरुष प्रवर कहलाते,
सुन व्याख्यान सहु हरसाते।।37।।
प्रधान शिष्य तसु दोय हजारे,
चालीसे शुभ सूरजवारे।
चैत्र सुदि बारस दिन आया,
मणिप्रभसागर अति हरसाया।।38।।

उपसंहार–

इन सभी प्रमाणों से यह स्पष्ट है कि शास्त्रार्थ द्वारा खरतर बिरुद की प्राप्ति 1080 से पूर्व ही हुई है। वि. सं. 1075 का निर्णय गढ़ सिवाना में पूज्य गच्छाधिपति आचार्यद्वय, मुनिराजों, साध्वीवर्याओं व इतिहासज्ञों की आज से 35 वर्ष पूर्व हुई सर्वसम्मति का परिणाम है।

वीतराग परमात्मा की आज्ञा विरुद्ध कुछ भी लिखा गया हो तो मन वचन काया से मिच्छामि दुक्कडं।

58

कल, आज और कल

मुनि मनितप्रभसागर

आलेख का शीर्षक पढकर चोंकिये मत! मैं किसी नाटक या धारावाहिक का विश्लेषण नहीं कर रहा। इस शीर्षक के चाहे मूल में कह दो, चाहे केन्द्र में समझ लो, अतीत, वर्तमान और भविष्य में संदर्भ में जीवन-शैली की समीक्षा है।

यहाँ इस तथ्य का स्पष्टीकरण भी जरुरी समझता हूँ कि इस जीवन-तकनीक का विश्लेषण, विवेचन और विहंगमावलोकन केवल जैन कौम के लोगों के लिये ही उपयोगी एवं आचरणीय नहीं है अपितु जैनेतर लोगों लिये भी पूर्णत: सदुपयोगी है।

कल, आज और कल- समय की अपनी एक लय है। विगत कल और अनागत कल के बीच आज का जीवन है, परिवेश है, विज्ञान और वैभव है, तर्क और तकनीक है।

यह समय की ही बलिहारी है, जो कभी खुशियों के हिम का आलय बन जाता है और कभी दु:ख का प्रलय भी बन जाता है। समय की समीक्षा नितांत जरूरी है क्योंकि कल और आज में आश्चर्यजनक परिवर्तन घटित हुए हैं और उनके अकल्पनीय-अप्रत्याशित परिणाम भी सामने आये हैं।

आईये, हम करें उन कारणों का विश्लेषण, जिनसे जीव-सृष्टि और भाव-दृष्टि का चक्र गड़बड़ा गया है।

हमारा बीता कल- जिसका साहस सबल है, जो खतरों से खेलने मे सोत्सुक है एवं जिसने आभ्यन्तर व्यक्तित्व के विकास पर अपनी सोच को केन्द्रित किया है, वे लोग तो बाह्य सुविधाओं के वशीभूत नहीं होते पर सुविधावादी, प्रमादी एवं अज्ञानवादी लोग सुविधाओं के बल पर हॅसी-खुशी को खरीदने व पाने की जिद्द पर अड़ जाते हैं।

बीते कल पर एक नजर डाले तो पायेंगे कि बीते 25 साल पहले का नजारा आज से बिल्कुल अलग-थलग था।

कोयल की कुहुक.... चेहरे पर नाचती मुस्कान... रंभाती हुई गोमाताएँ... बाहों में बाहें डालकर बतियाते बालक. ... परस्पर भेंट-वार्ता का आनंद!

सहनशील और चारित्रशील उन लोगों के पास माना कि सुविधा के साधन अल्प थे, इन्टरनेट और मोबाईल की शक्तियाँ नहीं थी पर मानसिक तौर पर शांत, शारीरिक तौर पर स्वस्थ और भावनात्मक तौर पर संवेदनशील वे लोग हर परिस्थिति में समता, सकारात्मक चिन्तन और सात्त्विक प्रवृत्तियों से जुड़े रहते थे।

स्वाध्याय, प्रभु-स्मरण, परोपकार, संत-सम्मान, पशु-प्रेम, सुख-दु:ख में परस्पर सहभागिता, चेहरे पर नाचता आत्म विश्वास, सशक्त देह-सम्पदा, उन्नत व्यक्तित्व एवं अवनत अहंकार स्वर्णिम अतीत का सुनहरा छायांकन है।

हमारा बीतता आज- 'आज' से ज्यादा मूल्यवान् कुछ भी नहीं क्योंकि अतीत एक सपना है, भविष्य एक कल्पना है और वर्तमान हमारा अपना है।

अतीत की तुलना में वर्तमान बहुत भिन्न-विभिन्न दृष्टिगत हो रहा है।

पहले खेतों में बैल हल-कार्य में नियोजित दिखते थे पर आज संचालित यंत्र! तब खुले आकाश के नीचे निद्राधीन लोग पर आज वातानुकूलित (A.C.) कक्ष में शयन। तब छुट्टियों के दिनों में स्वजन-परिजन से मिलने का आनंद, आज इन्टरनेट के झूठे सपनों में सुख ढूंढ़ती दुनिया। पहले एक दूसरे के सच्चे हितैषी, आज अपनेपन का मुखौटा लगाये स्वार्थी लोग। पहले निर्दोष खेलों में क्रीडारत बचपन, आज गुटखा, शराब जैसे दुर्व्यसनों में कैद किशोर! पहले परस्पर चर्चा-विचारणा में रत युवा पीढ़ी, आज मोबाईल में उलझी युवानी! पहले आरोग्य प्रदायक भोजन-शैली, आज स्वाद

और रोगवर्धक फूहड़ फास्ट फूड! पहले प्रभात में बजती मंदिरों में घण्टियों की मधुर ध्वनि, आज मोबाईल की चीखती रिंग-टोन! पहले मंदिरों-संतस्थानों में आत्म-चिन्तन, जीवन विकास और स्वयं का पर्यवेक्षण जबकि आज हॉटल, बार, सिनेमा हॉल और रिसोर्ट में गुणवत्ता का ह्रास-विनाश!

पद, अर्थ और पदार्थ को मुख्य मानने वाली जीवन शैली कंकर में हीरों की चमक तलाशती करती हुई सडकों पर दौड़ती-भागती हुई दिखाई दे रही है।

डिसपोजेबल पदार्थ जैसे कचरे के पर्वत में बदल रहे हैं, वहीं उनके संयोग से पदार्थों की गुणवत्ता को भी करारी मात खानी पड़ रही है। विनष्ट होने में असमर्थ ये पदार्थ गाय, बैल आदि के पेट में जाकर उन्हें परेशानी में डालते हैं, वही उन्हें जलाने पर उत्पन्न रासायनिक गैसों का उत्पादन वातावरण को उष्ण और प्रदूषित कर रहा है, जिससे दमा, कैंसर जैसी बीमारियाँ पाँव पसार रही है।

धोती, कुर्त्ता, पायजामा आदि शालीन वस्त्रों की संस्कृति का विनाश फटे-कटे Jeans के रूप में दिखायी दे रहा है।

नेता और अभिनेता के प्रभाव में किशोर व युवा न केवल गुमराह हो रहे हैं अपितु विद्रौही भी बन रहे हैं। कभी माता-पिता के पाँव दबाने वाली संतान आज उनका गला घोटने पर उतर गयी है।

भारत में एक समय वह भी था, जब घर के बाहर 'अतिथिः देवो भव' लिखा रहता था, सुस्वागतम्, पधारो सा, वेलकम की राहों से गुजरता हुआ वह टाइटल आज 'कुत्तों से सावधान' में बदल गया है।

आर्य संस्कृति से इससे क्रूर खिलवाड और क्या सकता है, जब गाँव-गाँव और शहर-शहर में सरे आम मदिरा बिक रही है, ईमान दम तोड रहा है और शील लूट रहा है!

व्यक्ति निजी स्वार्थों की सुरक्षा के लिये भले ही मूक-बधिर बन जाये पर प्रकृति कभी भी उन्हें माफ नहीं करेगी।

किसी कवि ने हृदय की गहरी पीड़ा गर्म श्वासों के साथ पन्नों पर उतारी है-

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ है, समय लिखेगा उनका भी अपराध॥

आने वाला कल- आने वाला कल 'आज' नींव पर खड़ा होगा। जैसा बीज, वैसे फल! छह दिनों तक बबूल के बीज को सिंचते रहे और सातवें दिन प्रार्थना करे कि हे प्रभो! कांटे मत देना, तो क्या यह संभव है?

नवीनीकरण के नवोन्मेष ने आदमी को इतना पागल बना दिया कि वह वर्तमान की भोग पदार्थ प्रधान जीवन शैली के दुष्परिणामों को भूल गया है।

जहरीली-विषैली गैसों का उत्पादन सतत बढता जा रहा है। रासायनिक पदार्थों के प्रयोग से फल व सब्जियों की गुणवत्ता पर बुरा असर हो रहा है। ग्लोबल वार्मिंग की समस्या भी ड़ाकिनी की भाँति मुँह फाड़े खड़ी है। इसमें बहुत सारा हाथ औद्योगिक विस्तार, पर्यावरण प्रदूषण, वृक्ष-कटाई आदि का भी है।

बाह्य विकास की अंधी दौड में पदार्थों की चाह, प्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा और अनियन्त्रित भोग प्रधान विचारधारा ने प्रकृति और संस्कृति से आदमी को बहुत दूर कर दिया है। वृक्षों के जंगल कन्क्रीट के जंगलों में बदल रहे हैं। 500 वर्ष पुराने वृक्षों की कटाई से वातावरण का संयम और संतुलन मानो धीरज को खो बैठा है। सुनामी, भूकम्प, बाढ़, प्रतिदिन परिवर्तित होता तापमान, अतिवृष्टि-अनावृष्टि, हिमशिखाओं का पिघलन जैसी समस्याएँ आज भी इतनी भयावह हैं तो कुछ वर्षों के बाद वे कितनी विकराल होगी, इस बात का अनुमान लगाना भी कठिन है।

कुल मिलाकर सुविधाओं की बैशाखी के सहारे सुख, स्वास्थ्य, सम्पत्ति, सम्प, समृद्धि और समता की मंजिल-प्राप्ति उसी तरह असंभव है जैसे नीर के मंथन से मक्खन की प्राप्ति अशक्य है।

चिन्तन की गहराई में एक बार डूबकी लगे तो जरूर निष्कर्ष के मोती हाथ लगेंगे और पीछे मुड़कर पुनः एक बार उस चौराहे पर चले, जहाँ से हम सभी राह भटक गये थे।

विधिमार्ग प्रकाशक जिनेश्वरसूरि और उनकी विशिष्ट परम्परा

–पुरातत्त्वाचार्य पद्मश्री विभुषित मुनि जिनविजयजी

श्री जिनेश्वरसूरि आचार्य श्री वर्द्धमानसूरि के शिष्य थे। जिनेश्वरसूरि के प्रगुरु एवं श्री वर्द्धमानसूरि के गुरु श्री उद्योतनसूरि थे, जो चन्द्रकुल के कोटिक गण की वज्री शाखा परिवार के थे।

(इन जिनेश्वरसूरि के विषय में, जिनदत्तसूरि कृत गणधरसार्द्धशतक की सुमतगणि कृत वृहद्वृत्ति में, जिनपालोपाध्याय लिखित खरतरगच्छ वृहद् गुर्वावली में, प्रभाचन्द्राचार्य रचित और किसी अज्ञात प्राचीन पूर्वाचार्य प्रबन्ध एवं अन्यान्य पट्टावलियाँ आदि अनेक ग्रन्थों-प्रबन्धों में कितना ही ऐतिहासिक वृत्तान्त ग्रथित किया हुआ उपलब्ध होता है।)

जिनेश्वरसूरि के समय में जैन यतिजनों की अवस्था

इनके समय में श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय में उन यतिजनों के समूह का प्राबल्य था जो अधिकतर चैत्यों अर्थात् जिन मन्दिरों में निवास करते थे। ये यतिजन जैन मन्दिर, जो उस समय चैत्य के नाम से विशेष प्रसिद्ध थे, उन्हीं में अहर्निश रहते, भोजनादि करते, धर्मोपदेश देते, पठन-पठनादि में प्रवृत होते और सोते-बैठते। अर्थात् चैत्य ही उनका मठ या वासस्थान था और इसलिए वे चैत्यवासी के नाम से प्रसिद्ध हो रहे थे। इनके साथ उनके आचार-विचार भी बहुत से ऐसे शिथिल अथवा भिन्न प्रकार के थे जो जैन शास्त्रों में वर्णित निर्ग्रन्थ जैनमुनि के आचारों से असंगत दिखाई देते थे। वे एक तरह के मठपति थे। शास्त्रोक्त आचारों का यथावत् पालन करने वाले यति-मुनि उस समय बहुत कम संख्या में नजर आते थे।

जिनेश्वरसूरि का चैत्यवासियों के विरुद्ध आन्दोलन

शास्त्रोक्त यतिधर्म के आचार और चैत्यवासी यतिजनों के उक्त व्यवहार में, परस्पर बड़ा असामंजस्य देखकर और श्रमण भगवान् महावीर द्वारा उपदिष्ट श्रमण धर्म की इस प्रकार प्रचलित विप्लव दशा से उद्विग्न होकर जिनेश्वरसूरि ने प्रतिकार के निमित्त अपना एक 'सुविहित मार्ग' नाम से नया गण स्थापित किया और चैत्यवासी यतियों के विरुद्ध एक प्रबल आन्दोलन शुरू किया।

यों तो प्रथम, इनके गुरु श्री वर्द्धमानसूरि स्वयं ही चैत्यवासी यतिजनों के एक प्रमुख सूरि थे। पर जैन शास्त्रों का विशेष अध्ययन करने पर मन में कुछ विरक्त भाव उदित हो जाने से और तत्कालीन जैन यति सम्प्रदाय की उक्त प्रकार की आचार विषयक परिसिथति की शिथिलता का अनुभव, कुछ अधिक उद्वेगजनक लगने से, उन्होंने उस अवस्था का त्याग कर, विशिष्ट त्यागमय जीवन का अनुसरण करना स्वीकृत किया था।

जिनेश्वरसूरि ने अपने गुरु के इस स्वीकृत मार्ग पर चलना विशेष रूप से निश्चित किया। इतना ही नहीं, उन्होंने उसे सारे सम्प्रदायव्यापी और देशव्यापी बनाने का भी संकल्प किया और उसके लिए आजीवन प्रबल पुरुषार्थ किया। इस प्रयत्न के उपयुक्त और आवश्यक ऐसे ज्ञानबल और चारित्रबल दोनों ही उनमें पर्याप्त प्रमाण में विद्यमान थे, इसलिये उनको अपने ध्येय में बहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई और उसी अणहिलपुर में, जहां पर चैत्यवासियों का सबसे अधिक प्रभाव और विशिष्ट समूह था, जाकर उन्होंने चैत्यवास के विरुद्ध अपना पक्ष और प्रतिष्ठान स्थापित किया। चौलुक्य नृपति दुर्लभराज की सभा में, चैत्यवासी पक्ष के समर्थक अग्रणी सूराचार्य जैसे महाविद्वान् और प्रबल सत्ताशील आचार्य के साथ शास्त्रार्थ कर, उसमें विजय प्राप्त की।

इस प्रसंग से जिनेश्वरसूरि की केवल अणहिलपुर में ही नहीं, अपितु सारे गुजरात में, और उसके आस-पास के

मारवाड़, मेवाड़, मालवा, वागड़, सिंध और दिल्ली तक के प्रदेशों में खूब ख्याति और प्रतिष्ठा बढ़ी। जगह-जगह सैकड़ों ही श्रावक उनके भक्त और अनुयायी बन गए। इसके अतिरिक्त सैकड़ों ही अजैन गृहस्थ भी उनके भक्त बनकर नये श्रावक बने। अनेक प्रभावशाली और प्रतिभाशील व्यक्तियों ने उनके पास यति दीक्षा लेकर उनके सुविहित शिष्य कहलाने का गौरव प्राप्त किया। उनकी शिष्य-संतति बहुत बढ़ी और वह अनेक शाखा-प्रशाखाओं में फैली। उसमें बड़े-बड़े विद्वान, क्रियानिष्ठ और गुणगरिष्ठ आचार्य उपाध्यायादि समर्थ साधु पुरुष हुए।

नवांग-वृत्तिकार अभयदेवसूरि, संवेगरंगशालादि ग्रन्थों के प्रणेता जिनचन्द्रसूरि, सुरसुन्दरी चरित के कर्त्ता धनेश्वर अपर नाम जिनभद्रसूरि, आदिनाथ चरितादि के रचयिता वर्धमानसूरि, पार्श्वनाथ चरित एवं महावीर चरित के कर्त्ता गुणचन्द्रगणी अपर नाम देवभद्रसूरि, संघपट्टकादि अनेक ग्रन्थों के प्रणेता जिनवल्लभसूरि इत्यादि अनेकानेक बड़े बड़े धुरन्धर विद्वान और शास्त्रकार, जो उस समय हुए और जिनकी साहित्यिक उपासना से जैन वाङ्मय भण्डार बहुत कुछ समृद्ध और सुप्रतिष्ठित बना-इन्हीं जिनेश्वरसूरि के शिष्य-प्रशिष्यों में से थे।

विधिपक्ष अथवा खरतरगच्छ का प्रादुर्भाव और गौरव

इन्हीं जिनेश्वरसूरि के एक प्रशिष्य आचार्य श्रीजिनवल्लभसूरि और उनके पट्टधर श्री जिनदत्तसूरि (वि.सं. 1169-1211) हुए जिन्होंने अपने प्रखर पाण्डित्य, प्रकृष्ट चारित्र और प्रचण्ड व्यक्तित्व के प्रभाव से मारवाड़, मेवाड़, बागड़, सिन्ध, दिल्ली मण्डल और गुजरात के प्रदेश में हजारों अपने नये भक्त श्रावक बनाये-हजारों ही अजैनों को उपदेश देकर नूतन जैन बनाये। स्थान-स्थान पर अपने पक्ष के अनेकों नये जिनमन्दिर और जैन उपाश्रय तैयार करवाये। अपने पक्ष का नाम इन्होंने 'विधिपक्ष' ऐसे उद्घोषित किया और जितने भी नये जिनमन्दिर इनके उपदेश से, इनके भक्त श्रावकों ने बनवाये उनका नाम विधिचैत्य, ऐसा रखा गया। और तदनन्तर यह समुदाय खरतर बिरूद की प्राप्ति के कारण 'खरतरगच्छ' नाम से अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ जो आज तक अविछिन्न रूप से विद्यमान है।

इस खरतरगच्छ में उसके बाद अनेक बड़े बड़े प्रभावशाली आचार्य, बड़े-बड़े विद्यानिधि उपाध्याय, बड़े-बड़े प्रतिभाशाली पण्डित मुनि और बड़े-बड़े मांत्रिक, तांत्रिक-ज्योतिर्विद्, वैद्यक विशारद आदि कर्मठ यतिजन हुए जिन्होंने अपने समाज की उन्नति, प्रगति और प्रतिष्ठा बढ़ाने में बड़ा भारी योगदान दिया। सामाजिक और साम्प्रदायिक उत्कर्ष की प्रवृत्ति के सिवा, खरतरगच्छानुयायी विद्वानों ने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं देशीयभाषा के साहित्य को भी समृद्ध करने में असाधारण उद्यम किया और इसके फलस्वरूप आज हमें भाषा, साहित्य, इतिहास, दर्शन, ज्योतिष, वैद्यक आदि विविध विषयों का निरूपण करने वाली छोटी-बड़ी सैकड़ों-हजारों ग्रन्थकृतियाँ जैन-भण्डारों में उपलब्ध हो रही हैं। खरतरगच्छीय विद्वानों की की हुई यह साहित्योपासना न केवल जैनधर्म की ही दृष्टि से महत्त्व वाली हैं, अपितु समुच्चय भारतीय संस्कृति के गौरव की दृष्टि से भी उतनी ही महत्ता रखती है।

साहित्योपासना की दृष्टि से खरतरगच्छ के विद्वान् यति-मुनि बड़े उदारचेता मालूम देते हैं। इस विषय में उनकी उपासना का क्षेत्र केवल अपने धर्म या सम्प्रदाय की बाड़ से बद्ध नहीं है। वे जैन और जैनेतर वाङ्मय की समान भाव से अध्ययन-अध्यापन करते रहे हैं। व्याकरण, काव्य, कोष, छन्द, अलंकार, नाटक, ज्योतिष, वैद्यक और दर्शनशास्त्र तक के अगणित अजैन ग्रन्थों का उन्होंने बड़े आदर से आकलन किया है और इन विषयों के अनेक अजैन ग्रन्थों पर उन्होंने अपनी पाण्डित्यपूर्ण टीकायें आदि रचकर तत्तद् ग्रन्थों और विषयों के अध्ययन कार्य में बड़ा उपयुक्त साहित्य तैयार किया है। खरतरगच्छ के गौरव को प्रदर्शित करने वाली ये सब बातें हम यहां पर बहुत ही संक्षेप में, केवल सूत्ररूप से उल्लिखित कर रहे हैं।

विशेष हम 'युगप्रधानाचार्यगुर्वावलि' नाम से विस्तृत पुरातन पट्टावली प्रकट कर चुके हैं उसमें इन जिनेश्वरसूरि से आरंभ कर, श्री जिनवल्लभसूरि की परम्परा के खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिनपद्मसूरि के पट्टाभिषिक्त होने के समय तक का-विक्रम संवत् 1400 के लगभग का

बहुत विस्तृत और प्राय: विश्वस्त ऐतिहासिक वर्णन दिया हुआ है। उसके अध्ययन से पाठकों को खरतरगच्छ के तत्कालीन गौरव-गाथा का अच्छा परिचय मिल सकेगा।

इस तरह पीछे से बहुत प्रसिद्धिप्राप्त उक्त खरतरगच्छ के अतिरिक्त, जिनेश्वरसूरि की शिष्य-परम्परा में से अन्य भी कई-एक छोटे-बड़े गण-गच्छ प्रचलित हुए और उनमें भी कई बड़े-बड़े प्रसिद्ध, ग्रन्थकार, व्याख्यानिक, वादी, तपस्वी, चमत्कारी साधु-यति हुए जिन्होंने अपने व्यक्तित्व से जैन समाज को समुन्नत करने में उत्तम योग दिया।

जिनेश्वरसूरि के जीवन का अन्य यतिजनों पर प्रभाव

जिनेश्वरसूरि के प्रबल पाण्डित्य और उत्कृष्ट चरित्र का प्रभाव इस तरह न केवल उनके निजके शिष्य समूह में ही प्रसारित हुआ, अपितु तत्कालीन अन्यान्य गच्छ एवं यति समुदाय के भी बड़े-बड़े व्यक्तित्वशाली यतिजनों पर उसने गहरा असर डाला और उसके कारण उनमें से भी कई समर्थ व्यक्तियों ने, इनके अनुकरण में क्रियोद्धार, ज्ञानोपासना, आदि की विशिष्ट प्रवृत्ति का बड़े उत्साह के साथ उत्तम अनुसरण किया।

(जिनेश्वरसूरि के जीवन सम्बन्धी साहित्य और उनकी रचनाओं का विशेष अध्ययन मुनि जिनविजय ने कथाकोष की विस्तृत प्रस्तावना में बहुत विस्तार से दिया है, यहां उसके आवश्यक अंश ही प्रस्तुत किये गये हैं।)

जिनेश्वरसूरि से जैन समाज में नूतन युग का आरंभ

इनके प्रादुर्भाव और कार्यकलाप के प्रभाव से जैन समाज में एक सर्वथा नवीन युग का आरम्भ होना शुरू हुआ। पुरातन प्रचलित भावनाओं में परिवर्तन होने लगा। त्यागी और गृहस्थ दोनों प्रकार के समूहों में नए संगठन होने शुरू हुए। त्यागी अर्थात् यति वर्ग जो पुरातन परम्परागत गण और कुल के रूप में विभक्त था, वह अब नये प्रकार के गच्छों के रूप में संगठित होने लगा। देवपूजा और गुरु उपासना की जो कितनी पुरानी पद्धतियां प्रचलित थीं, उनमें संशोधन और परिवर्तन के वातावरण का सर्वत्र उद्भव होने लगा। इनके पहले यतिवर्ग का जो एक बहुत बड़ा समूह चैत्य निवासी होकर चैत्यों की संपत्ति और संरक्षा का अधिकारी बना हुआ था और प्राय: शिथिलक्रिय और स्वपूजानिरत हो रहा था, उसमें इनके आचारप्रवण और भ्रमणशील जीवन के प्रभाव से बड़े वेग से और बड़े परिमाण में परिवर्तन होना प्रारम्भ हुआ। इनके आदर्शों को लक्ष्य में रखकर अन्यान्य अनेक समर्थ यतिजन चैत्याधिकार का और शिथिलाचार का त्याग कर संयम की विशुद्धि के निमित्त उचित क्रियोद्धार करने लगे और अच्छे संयमी बनने लगे। संयम और तपश्चरण के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न विषयों और शास्त्रों के अध्ययन और ज्ञानसंपादन कार्य भी इन यतिजनों में खूब उत्साह के साथ व्यवस्थित रूप से होने लगा। सभी उपादेय विषयों के नये-नये ग्रन्थ निर्माण किये जाने लगे और पुरातन ग्रन्थों पर टीका-टिप्पण आदि रचे जाने लगे।

अध्ययन-अध्यापन और ग्रन्थ-निर्माण के कार्य में आवश्यक ऐसे पुरातन जैन-ग्रन्थों के अतिरिक्त ब्राह्मण और बौद्ध सम्प्रदाय के भी व्याकरण, न्याय, अलंकार, वाक्य, कोष, छन्द, ज्योतिष आदि विविध विषयों के सभी महत्वपूर्ण ग्रन्थों की पोथियों के संग्रह वाले बड़े-बड़े ज्ञानभण्डार भी स्थापित किये जाने लगे।

अब ये यतिजन केवल अपने-अपने स्थानों में ही बद्ध होकर बैठ रहने के बदले भिन्न-भिन्न प्रदेशों में घूमने लगे और तत्कालीन परिस्थिति के अनुरूप, धर्मप्रचार का कार्य करने लगे। जगह-जगह अजैन क्षत्रिय और वैश्य कुलों को अपने आचार और ज्ञान से प्रभावित कर, नये-नये जैन श्रावक बनाए जाने लगे और पुराने जैन गोष्ठी-कुल नवीन जातियों के रूप में संगठित किये जाने लगे। पुराने जैन देव-मन्दिरों का उद्धार और नवीन मन्दिरों का निर्माण-कार्य भी सर्वत्र विशेष रूप से होने लगा। जिन यतिजनों ने चैत्यनिवास छोड़ दिया था उनके रहने के लिये ऐसे नये-नये वसति-गृह बनने लगे जिनमें उन यतिजनों के अनुयायी श्रावक भी अपनी नित्य-नैमित्तिक धर्मक्रियायें करने की व्यवस्था रखते थे। ये ही वसति-गृह पिछले काल में उपाश्रय के नाम से प्रसिद्ध हुए। मन्दिरों में पूजा और उत्सवों की प्रणालिकाओं में भी नये-नये परिवर्तन होने लगे और इसके कारण यतिजनों में परस्पर, कितनेक विवादास्पद विचारों और शब्दार्थों पर भी वाद-विवाद होने

लगा, और इसके परिणाम में कई नये-नये गच्छ और उपगच्छ भी स्थापित होने लगे। ऐसे चर्चास्पद विषयों पर स्वतंत्र छोटे-बड़े ग्रन्थ भी लिखे जाने लगे और एक-दूसरे सम्प्रदाय की ओर से उनका खण्डन-मण्डन भी किया जाने लगा। इस प्रकार इन यतिजनों में पुरातन प्रचलित प्रवाह की दृष्टि से, एक प्रकार का नवीन जीवन-प्रवाह चालू हुआ और उसके द्वारा जैन संघ का नूतन संगठन बनना प्रारम्भ हुआ।

इस तरह तत्कालीन जैन इतिहास का सिंहावलोकन करने से ज्ञात होता है कि विक्रम की 11वीं शताब्दी के प्रारंभ में जैन यतिवर्ग में एक प्रकार से युग की उषा का आभास होने लगा, जिसका प्रकट प्रादुर्भाव जिनेश्वरसूरि के गुरु वर्धमानसूरि के क्षितिज पर उदित होने पर दृष्टिगोचर हुआ। जिनेश्वरसूरि के जीवनकार्य ने इस युग-परिवर्तन को सुनिश्चित मूर्त्त स्वरूप दिया। तब से लेकर पिछले प्राय: 900 वर्षों में, इस पश्चिम भारत में जैन धर्म के जो सांप्रदायिक और सामाजिक स्वरूप का प्रवाह प्रचलित रहा उसके मूल में जिनेश्वरसूरि का जीवन सबसे अधिक विशिष्ट प्रभाव रखता है और इस दृष्टि से जिनेश्वरसूरि को, जो उनके शिष्य-प्रशिष्यों ने, युगप्रधान पद से संबोधित और स्तुतिगोचर किया है वह सर्वथा ही सत्य वस्तुस्थिति का निदर्शक है।

जिनेश्वरसूरि एक बहुत भाग्यशाली साधु पुरुष थे। इनकी यशोरेखा एवं भाग्य रेखा बड़ी उत्कट थी। इससे इनको ऐसे-ऐसे शिष्य और प्रशिष्यरूप महान् सन्ततिरत्न प्राप्त हुए जिनके पाण्डित्य और चारित्र्य ने इनके गौरव को दिगन्तव्यापी और कल्पान्त स्थायी बना दिया। यों तो प्राचीनकाल में, जैन संप्रदाय में सैकड़ों ही ऐसे समर्थ आचार्य हो गए हैं जिनका संयमी जीवन जिनेश्वरसूरि के समान ही महत्वशाली और प्रभावपूर्ण था; परन्तु जिनेश्वरसूरि के जैसा विशाल-प्रज्ञ और विशुद्ध संयमवान्, विपुल शिष्य-समुदाय शायद बहुत ही थोड़े आचार्यों को प्राप्त हुआ होगा। जिनेश्वरसूरि के शिष्य-प्रशिष्यों में एक-से-एक बढ़ कर अनेक विद्वान् और संयमी पुरुष हुए और उन्होंने अपने महान् गुरु की गुणगाथा का बहुत ही उच्चस्वर से खूब ही गान किया है। सद्भाग्य से इनके ऐसे शिष्य-प्रशिष्यों की बनाई हुई बहुत सी ग्रंथ-कृतियां आज भी उपलब्ध हैं और उनमें से हमें इनके विषय की यथेष्ट गुरु-प्रशस्तियां पढ़ने को मिलती हैं।

चैत्यवास के विरुद्ध जिनेश्वरसूरि ने जिन विचारों का प्रतिपादन किया था, उनका सबसे अधिक विस्तार और प्रचार वास्तव में जिनवल्लभसूरि ने किया था। उनके उपदिष्ट मार्ग का इन्होंने बड़ी प्रखरता के साथ समर्थन किया और उसमें उन्होंने अपने कई नये विचार और नए विधान भी सम्मिलित किये।

श्री जिनवल्लभसूरि

जिनवल्लभसूरि मूल में मारवाड़ के एक बड़े मठाधीश चैत्यवासी गुरु के शिष्य थे परन्तु वे उनसे विरक्त होकर गुजरात में अभयदेवसूरि के पास शास्त्राध्ययन करने के निमित्त उनके अन्तेवासी होकर रहे थे। ये बड़े प्रतिभाशाली विद्वान, कवि, साहित्यज्ञ, ग्रन्थकार और ज्योतिष शास्त्र विशारद थे। इनके प्रखर पाण्डित्य और विशिष्ट वैशारद्य को देखकर अभयदेवसूरि इन पर बड़े प्रसन्न रहते थे और अपने मुख्य दीक्षित शिष्यों की अपेक्षा भी इन पर अधिक अनुराग रखते थे। अभयदेवसूरि चाहते थे कि अपने उत्तराधिकारी पद पर इनकी स्थापना हो, परन्तु ये मूल चैत्यवासी गुरु के दीक्षित शिष्य होने से शायद इनको गच्छनायक के रूप में अन्यान्य शिष्य स्वीकार नहीं करेंगे ऐसा सोचकर अपने जीवनकाल में वे इस विचार को कार्य में नहीं ला सके। उनके पट्टधर के रूप में वर्धमानाचार्य (आदिनाथ चरितादि के कर्ता) की स्थापना हुई, तथापि अंतावस्था में अभयदेवसूरि ने प्रसन्नचन्द्रसूरि को सूचित किया था कि योग्य समय पर जिनवल्लभ को आचार्य पद देकर मेरा पट्टाधिकारी बनाना परन्तु परन्तु वैसा उचित अवसर आने के पहले ही प्रसन्नचन्द्रसूरि का स्वर्गवास हो गया। उन्होंने अभयदेवसूरिजी की उक्त इच्छा को अपने उत्तराधिकारी पट्टधर देवभद्राचार्य के सामने प्रकट किया और सूचित किया कि इस कार्य को तुम संपादित करना।

अभयदेवसूरि के स्वर्गवास के बाद अणहिलपुर और स्तम्भतीर्थ जैसे गुजरात के प्रसिद्ध स्थानों में जहां अभयदेव के दीक्षित शिष्यों का प्रभाव था, वहां से अपरिचित स्थान में जाकर अपने विद्याबल के सामर्थ्य द्वारा

जिनवल्लभ ने अपने प्रभाव का कार्यक्षेत्र बनाना चाहा। इसके लिए मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ को इन्होंने पसन्द किया, वहां इनकी यथेष्ट मनोरथ सिद्धि हुई। फिर मारवाड़ के नागौर आदि स्थानों में भी इनके बहुत से भक्त-उपासक बने। धीरे-धीरे इनका प्रभाव मालवा में भी बढ़ा। मेवाड़, मारवाड़ में तब बहुत से चैत्यवासी यति समुदाय थे उनके साथ इनकी प्रतिस्पर्धा भी खूब हुई। इन्होंने उनके अधिष्ठित देवमन्दिरों को अनायतन ठहराया और उनमें किये जाने वाले पूजन उत्सवादि को अशास्त्रीय उद्घोषित किया। अपने भक्त उपासकों द्वारा अपने पक्ष के लिए जगह-जगह नए मन्दिर बनवाये और उनमें किये जाने वाले पूजादि विधानों के लिए कितनेक नियम निश्चित किये। इस विषय के छोटे बड़े कई प्रकरण और ग्रन्थादि की भी इन्होंने रचना की।

देवभद्राचार्य ने इनके बढ़े हुए इस प्रकार के प्रौढ़ प्रभाव को देखकर और इनके पक्ष में सैकड़ों उपासकों का अच्छा समर्थ समूह जानकर इनको आचार्य पद देकर अभयदेवसूरि के पट्टधर रूप में इन्हें प्रसिद्ध करने का निश्चय किया। जिनेश्वरसूरि के शिष्यसमूह में उस समय शायद देवभद्राचार्य ही सबसे अधिक प्रतिष्ठा-सम्पन्न और सबसे अधिक वयोवृद्ध पुरुष थे। वे इस कार्य के लिए गुजरात से रवाना होकर चित्तौड़ पहुँचे। यह चित्तौड़ ही जिनवल्लभसूरि के प्रभाव उद्गम एवं केन्द्र स्थान था। यहीं पर सबसे पहले जिनवल्लभसूरि के नये उपासक भक्त बने और यहीं पर इनके पक्ष का सबसे पहिला 'वीर विधि चैत्य' नामक विशाल जैन मन्दिर बना। वि.सं. 1167 के आषाढ़ मास में इनको इसी मन्दिर में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर देवभद्राचार्य ने अपने गच्छपति गुरु प्रसन्नचन्द्रसूरि के उस अन्तिम आदेश को सफल किया। पर दुर्भाग्य से ये इस पद का दीर्घकाल तक उपभोग नहीं कर सके। चार ही महीने के अन्दर इनका उसी चित्तौड़ में स्वर्गवास हो गया। इस घटना को जानकर देवभद्राचार्य को बड़ा दु:ख हुआ।

श्री जिनदत्तसूरि

जिनवल्लभसूरि ने अपने प्रभाव से मारवाड़, मेवाड़, मालवा, बागड़ आदि देशों में जो सैकड़ों ही नये भक्त उपासक बनाये थे और अपने पक्ष के अनेक विधि-चैत्य स्थापित किये थे। उनका नियामक ऐसा कोई समर्थ गच्छनायक यदि न रहा तो वह पक्ष छिन्न-भिन्न हो जायगा और इस तरह जिनवल्लभसूरि का किया हुआ कार्य विफल हो जायगा, यह सोच कर देवभद्राचार्य, जिनवल्लभसूरि के पट्ट पर प्रतिष्ठित करने के लिए अपने सारे समुदाय में से किसी योग्य व्यक्तित्व वाले यतिजन की खोज करने लगे। उनकी दृष्टि धर्मदेव उपाध्याय के शिष्य पंडित सोमचन्द्र पर पड़ी जो इस पद के सर्वथा योग्य एवं जिनवल्लभ के जैसे ही पुरुषार्थी, प्रतिभाशाली, क्रियाशील और निर्भय प्राणवान व्यक्ति थे। देवभद्राचार्य फिर चित्तौड़ गए और वहां पर जिनवल्लभसूरि के प्रधान-प्रधान उपासकों के साथ परामर्श कर उनकी सम्मति से वि.सं. 1169 के वैशाख मास में सोमचन्द्र गणि को आचार्य पद देकर जिनदत्तसूरि के नाम से जिनवल्लभसूरि के उत्तराधिकारी आचार्य पद पर उन्हें प्रतिष्ठित किया। जिनवल्लभसूरि के विशाल उपासक वृन्द का नायकत्व प्राप्त करते ही जिनदत्तसूरि ने अपने पक्ष की विशिष्ट संघटना करनी शुरू की। जिनेश्वरसूरि प्रतिपादित कुछ मौलिक मन्तव्यों का आश्रय लेकर और कुछ जिनवल्लभसूरि के उपदिष्ट विचारों को पल्लवित कर इन्होंने जिनवल्लभ द्वारा स्थापित उक्त विधिपक्ष नामक संघ का बलवान और नियमबद्ध संगठन किया जिसकी परम्परा का प्रवाह आठ सौ वर्ष पूरे हो जाने पर भी अखण्डित रूप से चल रहा है।

जिनदत्तसूरि ने प्राकृत, संस्कृत और अपभ्रंश भाषा में छोटे-बड़े अनेक ग्रन्थों की रचना की। इनमें एक गणधर सार्द्धशतक नामक ग्रन्थ है जिसमें इन्होंने भगवान महावीर के शिष्य गणधर गौतम से लेकर अपने गच्छपति गुरु जिनवल्लभसूरि तक के महावीर के शासन में होने वाले और अपनी संप्रदाय परम्परा में माने जाने वाले प्रधान-प्रधान गणधारी आचार्यों की स्तुति की है। उन्होंने 150 गाथा के प्रकरण में आदि की 62 गाथाओं तक में तो पूर्वकाल में हो जाने वाले कितनेक पूर्वाचार्यों की प्रशंसा की है। 63 से लेकर 84 तक की गाथाओं में वर्द्धमानसूरि और उनके शिष्यसमूह में होने वाले जिनेश्वर, बुद्धिसागर, जिनचन्द्र, अभयदेव, देवभद्रादि अपने निकट पूर्वज गुरुओं की स्तुति की है। 85वीं गाथा से लेकर 147 तक की गाथाओं में अपने गुरु जिनवल्लभ की बहुत ही प्रौढ़ शब्दों

में तरह-तरह से स्तवना की है। जिनेश्वरसूरि के गुणवर्णन में इन्होंने इस ग्रन्थ में लिखा है कि वर्द्धमानसूरि के चरणकमलों में भ्रमर के समान सेवारसिक जिनेश्वरसूरि हुए वे सब प्रकार के भ्रमों से रहित थे अर्थात् अपने विचारों में निर्भ्रम थे, स्वसमय और परसमय के पदार्थ सार्थ का विस्तार करने में समर्थ थे। इन्होंने अणहिलवाड़ में दुर्लभराज की सभा में प्रवेश करके नामधारी आचार्यों के साथ निर्विकार भाव से शास्त्रीय विचार किया और साधुओं के लिये वसति-निवास की स्थापना कर अपने पक्ष का स्थापन किया। जहां पर गुरु क्रमागत सद्वार्ता का नाम भी नहीं सुना जाता था, उस गुजरात देश में विचरण कर इन्होंने वसतिमार्ग को प्रकट किया।

जिनदत्तसूरि की इसी तरह की एक और छोटी सी (21 गाथा की) प्राकृत पद्य रचना है जिसका नाम है-सुगुरु पारतन्त्र्य स्तव। इसमें जिनेश्वरसूरि की स्तवना में वे कहते हैं कि जिनेश्वर अपने समय के युगप्रवर होकर सर्व सिद्धान्तों के ज्ञाता थे। जैन मत में जो शिथिलाचार रूप चोर समूह का प्रचार हो रहा था उसका उन्होंने निश्चल रूप से निर्दलन किया। अणहिलवाड़ में दुर्लभराज की सभा में द्रव्यलिंगी (वेशधारी) रूप हाथियों का सिंह की तरह विदारण कर डाला। स्वेच्छाचारी सूरियों के मतरूपी अन्धकार का नाश करने में सूर्य के समान ये जिनेश्वरसूरि प्रकट हुए।

जिनेश्वरसूरि के साक्षात् शिष्य-प्रशिष्यों द्वारा किये गये उनके गौरव परिचयात्मक उल्लेखों से हमें यह अच्छी तरह ज्ञात हुआ कि उनका आंतरिक व्यक्तित्व कैसा महान् था। जिनदत्तसूरि के किये गये उपर्युक्त उल्लेखों में एक ऐतिहासिक घटना का हमें सूचन मिला कि उन्होंने गुजरात के अणहिलवाड़ के राजा दुर्लभराज की सभा में नामधारी आचार्यों के साथ वाद-विवाद कर उनको पराजित किया और वहां पर वसतिवास की स्थापना की।

श्री जिनचन्द्रसूरि

जिनेश्वरसूरि के पट्टधर शिष्य जिनचन्द्रसूरि हुए। अपने गुरु के स्वर्गवास के बाद यही उनके पट्ट पर प्रतिष्ठित हुए और गण-प्रधान बने। इन्होंने अपने बहुश्रुत एवं विख्यात-कीर्ति ऐसा लघु गुरु-बन्धु अभयदेवाचार्य की अभ्यर्थना के वश होकर संवेगरंगशाला नामक एक संवेग भाव के प्रतिपादक शांतरस प्रपूर्ण एवं वृहद् प्रमाण प्राकृत कथा ग्रन्थ की रचना सं. 1125 में की।

श्री अभयदेवसूरि

जिनेश्वरसूरि के अनुक्रम में शायद तीसरे परन्तु ख्याति और महत्ता की दृष्टि से सर्वप्रथम ऐसे महान् शिष्य श्री अभयदेवसूरि हुए, जिन्होंने जैनागम ग्रन्थों में जो एकादश-अङ्ग सूत्र ग्रन्थ हैं, इनमें से नौ अंग (3 से 11) सूत्रों पर सुविशद् संस्कृत टीकाएं बनाई। अभयदेवाचार्य अपनी इन व्याख्याओं के कारण जैन साहित्याकाश में कल्पान्त स्थायी नक्षत्र के समान सदा प्रकाशित और सदा प्रतिष्ठित रूप में उल्लिखित किये जायेंगे। श्वेताम्बर सप्रदाय के पिछले सभी गच्छ और सभी पक्ष वाले विद्वानों ने अभयदेवसूरि को बड़ी श्रद्धा और सत्यनिष्ठा के साथ एक प्रमाणभूत एवं तथ्यवादी आचार्य के रूप में स्वीकृत किया है और इनके कथनों को पूर्णतया आप्तवाक्य की कोटि में समझा है। अपने समकालीन विद्वत् समाज में भी इनकी प्रतिष्ठा बहुत ऊँची थी। शायद ये अपने गुरु से भी बहुत अधिक आदर के पात्र और श्रद्धा के भाजन बने थे।

श्री जिनदत्तसूरि

जिनदत्तसूरि, जिनेश्वरसूरि के साक्षात् प्रशिष्यों में से ही एक थे। इनके दीक्षा-गुरु धर्मदेव उपाध्याय थे जो जिनेश्वरसूरि के स्वहस्त दीक्षित अन्यान्य शिष्यों में से थे। इनका मूल दीक्षा नाम सोमचन्द्र था, हरिसिंहाचार्य ने इनको सिद्धान्त ग्रन्थ पढ़ाये थे। इनके उत्कट विद्यानुराग पर प्रसन्न होकर देवभद्राचार्य ने अपना वह प्रिय कटाखरण (लेखनी), जिससे उन्होंने अपने बड़े-बड़े चार ग्रन्थों का लेखन किया था, इनको भेंट के स्वरूप में प्रदान किया था। ये बड़े ज्ञानी, ध्यानी और उद्यतविहारी थे। जिनवल्लभसूरि के स्वर्गवास के पश्चात् इनको उनके उत्तराधिकारी पद पर देवभद्राचार्य ने आचार्य के रूप में स्थापित किया था।

प्रेरक कहानी

प्रस्तुति कैलाश संकलेचा

एक बार एक युवक को संघर्ष करते–करते कई वर्ष हो गए लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। वह काफी निराश हो गया, और नकारात्मक विचारों ने उसे घेर लिया। उसने इस कदर उम्मीद खो दी कि आत्महत्या करने का मन बना लिया।

वह जंगल में गया और वह आत्महत्या करने ही जा रहा था कि अचानक एक सन्त ने उसे देख लिया।

सन्त ने उससे कहा– बच्चे क्या बात है, तुम इस घनघोर जंगल में क्या कर रहे हो?

उस युवक ने जवाब दिया– मैं जीवन में संघर्ष करते–करते थक गया हूँ और मैं आत्महत्या करके अपने बेकार जीवन को नष्ट करने आया हूँ। सन्त ने पूछा तुम कितने दिनों से संघर्ष कर रहे हो?

युवक ने कहा– मुझे दो वर्ष के लगभग हो गए, मुझे ना तो कहीं नौकरी मिली है, और ना ही किसी परीक्षा में सफल हो सका हूँ।

सन्त ने कहा– तुम्हे नौकरी भी मिल जाएगी और तुम सफल भी हो जायोगे। निराश न हो, कुछ दिन और प्रयास करो।

युवक ने कहा– मैं किसी भी काम के योग्य नहीं हूँ, अब मुझसे कुछ नहीं होगा।

जब सन्त ने देखा कि युवक बिलकुल हिम्मत हार चुका है तो उन्होंने उसे एक कहानी सुनाई।

"एक बार एक बच्चे ने दो पौधे लगाये, एक बांस का और एक फर्न (नागफनी, कैक्टस, पत्तियों वाला) का, फर्न वाले पौधे में तो कुछ ही दिनों में पत्तियाँ निकल आई। और फर्न का पौधा एक साल में काफी बढ़ गया पर बाँस के पौधे में साल भर में कुछ नहीं हुआ। लेकिन बच्चा निराश नहीं हुआ।

दूसरे वर्ष में भी बाँस के पौधे में कुछ नहीं हुआ। लेकिन फर्न का पौधा और बढ़ गया। बच्चे ने फिर भी निराशा नहीं दिखाई।

तीसरे वर्ष और चौथे वर्ष भी बाँस का पौधा वैसा ही रहा, लेकिन फर्न का पौधा और बड़ा हो गया। बच्चा फिर भी निराश नहीं हुआ।

फिर कुछ दिनों बाद बाँस के पौधे में अंकुर फूटे और देखते–देखते कुछ ही दिनों में बाँस का पेड़ काफी ऊँचा हो गया। बाँस के पेड़ को अपनी जड़ों को मजबूत करने में चार पाँच साल लग गए।"

सन्त ने युवक से कहा कि यह आपका संघर्ष का समय, अपनी जड़ें मजबूत करने का समय है। आप इस समय को व्यर्थ नहीं समझे एवं निराश न हो। जैसे ही आपकी जड़ें मजबूत, परिपक्व हो जाएँगी, आपकी सारी समस्याओं का निदान हो जायेगा। आप खूब फलेंगे, फूलेंगे, सफल होंगें और आकाश की ऊँचाइयों को छूएंगें।

संदेश : आप स्वयं की तुलना अन्य लोगों से न करें। आत्मविश्वास नहीं खोएं। अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे। समय आने पर आप बाँस के पेड़ की तरह बहुत ऊँचे हो जाओगे। सफलता की बुलंदियों पर पहुंचोगे।

बात युवक के समझ में आ गई और वह पुनः संघर्ष के पथ पर चल दिया।

दोस्तों, फर्न के पौधे की जड़ें बहुत कमज़ोर होती हैं जो जरा सी तेज़ हवा से ही जड़ से उखड़ जाता है। और बाँस के पेड़ की जड़ें इतनी मजबूत होती हैं कि बड़ा सा बड़ा तूफ़ान भी उसे नहीं हिला सकता।

इसलिए संघर्ष से घबराये नहीं। मेहनत करते रहें और अपनी जड़ों को इतनी मजबूत बना लें कि बड़ी से बड़ी मुसीबत, मुश्किल से मुश्किल हालात आपके इरादों को कमजोर ना कर सके और आपको आगे बढ़ने से रोक ना सके।

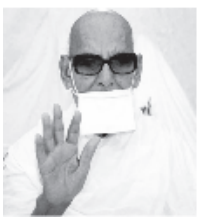

पूज्य प्रवर्तक रूपमुनिजी म. का स्वर्गवास

जैतारण 18 अगस्त। श्रमण संघ के प्रवर्तक पद विभूषित मुनि प्रवर श्री रूपमुनिजी म. का 18 अगस्त 2018 को सागारी संथारा सहित स्वर्गवास हो गया। पूज्य रूपमुनिजी म. लोकमान्य संत थे। छत्तीस कोम के सर्वमान्य संत थे। उनका स्वर्गवास जैन समाज की बडी क्षति है। जहाज मंदिर परिवार उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

समाचार दर्शन

के-युप की सभी शाखाओं द्वारा देशभर में रक्तदान का सामूहिक का आयोजन

अखिल भारत 15 अगस्त। परम पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से संस्थापित अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के–युप, अपनी स्थापना से ही समाज सेवा, जीवदया, साधु साध्वी वैयावच्च, विहार सेवा, ज्ञान वाटिका द्वारा संस्कार वर्धन, स्वाध्याय शिविरों द्वारा पर्युषण आराधना, वांचना शिविरों द्वारा ज्ञान सेवा आदि क्षेत्रों में निरन्तर अपना अवदान दे रहा है।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः

हार्दिक अनुमोदना

दिव्याशीष

स्व. मिश्रीमलजी छाजेड़

स्व. जमुबाई छाजेड़

अनुमोदना

भवंरलाल छाजेड़

श्रीमति सुमित्रा देवी छाजेड़
(धर्मपत्नी भंवरलाल छाजेड़)
(51 उपवास)

तपस्वी
नो
जय
जयकार
तपस्वी
अमर
रहे

श्रीमति सारीका देवी छाजेड़
(धर्मपत्नी दिनेश छाजेड़)
(सिद्धीतप)

शुभेच्छु

शाह भंवरलाल पुत्र दिनेशकुमार, अमितकुमार-सीमादेवी, पौत्री - प्राची, नव्या
बेटा-पोता- मिश्रीमलजी छोगालालजी छाजेड़ मरुधर में गढ़ सिवाना (उम्मेदपुरा)
पुत्री-जवांई-श्रीमती संगीतादेवी-ललीतकुमारजी ढेलड़िया, दोहिती-सनया

फर्म : **पूर्णिमा कटलेरी मार्ट**

15-8-38, सिदम्बर बाजार, हैदराबाद (मो. 9849238120)

पाद प्रक्षालन दिल्ली श्री संघ
काम्ली वहोराते खाखरा परिवार
लाभार्थी
परिवार
गुवाहाटी (असम)
गुरुपूजन करते संघवी परिवार
गहुँली करते डागा परिवार

श्री जैन श्वेताम्बर
मंदिर मार्गी संघ

इंदौर के महावीर बाग में संत समागम में मंच पर बिराजित गुरू भगवंत

इन्दौर में आयोजित श्री अवंति तीर्थ प्रतिष्ठा निमित्त अट्ठम तप के लाभार्थी श्री विजयजी मेहता का बहुमान

फलोदी में साध्वी डॉ. विज्ञांजनाश्रीजी म.सा. के अट्ठाई की तपस्या

खरतर सहस्राब्दी वर्ष इन्दौर चातुर्मास-2018

मासक्षमण के तपस्वी

सौ. रजनी देवी बाफना

सौ. कमला देवी संचेती

सिद्धितप के तपस्वी

श्री अशोक जैन

सिद्धितप के तपस्वी

श्री अनिलजी वैद

सौ. मीनादेवी वैद

सौ. पुष्पादेवी मेहता

गच्छ के समस्त युवाओं को एक छत्र के नीचे लाकर क्रांति की अलख जगाने के लिए परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के उद्देश्य से "के–युप की एक आवाज – सभी शाखाएं एक साथ" के आह्वान के साथ अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा खरतरगच्छ के गौरवशाली सहस्राब्दी पर्व (1000 वर्ष) एवं देश के 72वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 15 अगस्त 2018 को देश भर में सामूहिक मेगा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। केयुप की बैंगलोर, चेन्नई, रायपुर, सूरत, सूरत शहर शाखा, सूरत –2 (पाल), अहमदाबाद, नीमच, हैदराबाद, बीकानेर, अक्कलकुआ, दुर्ग, खापर, फलोदी, इचलकरंजी, कोट्टुर, सेलंबा, नवसारी, धमतरी, बालोतरा, खेतिया, तिरुपुर सहित देशभर की 25 से भी अधिक शाखाओं में रक्तदान रूपी मानव सेवा का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

केयुप की विभिन्न शाखाओं द्वारा स्थानीय संघों के सहकार से वहां के स्थानीय अस्पताल एवं ब्लड बैंक के सहयोग से 1500 से भी अधिक युनिट रक्त एकत्रित कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। जिसमें खेतिया शाखा ने सबसे अधिक 161 यूनिट रक्त एकत्रित कर रिकॉर्ड कायम किया।

परम उपकारी गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के उद्देश्य से केयुप की सभी शाखाओं द्वारा किया गया यह सामूहिक प्रयास निश्चित ही सराहनीय है। समस्त रक्तदाताओं, सभी दानदाताओं, समस्त शाखाओं, सभी सदस्यों की भूरी भूरी अनुमोदना...

धनपत कानुंगो
अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्
राष्ट्रिय संयोजक (प्रचार प्रसार)

केयुप चेन्नई शाखा समाचार

चेन्नई 2 सितंबर। अखिल भारतीय खरतरगछ युवा परिषद की साधारण सभा दि. 2 सितंबर को श्री जैन दादावाड़ी अयनावरम में संपन्न हुई। मीटिंग में श्री मोहनचंदजी ढड्ढा, पदमजी टाटिया आदि गणमान्य जन भी उपस्थित थे। 2018–2021 के लिए नयी कार्यकारिणी का चयन किया गया। निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए–

अध्यक्ष– श्री सुरेश लुनिया, उपाध्यक्ष– श्री संतोष बरड़िया एवं श्री अशोक बैद, सचिव– श्री संजय बैद, कोषाध्यक्ष– श्री गौतम संकलेचा, सहसचिव– श्री धीरज बोथरा, सह कोषाध्यक्ष– श्री गौतम बच्छावत।

जैन संत समागम में तिरंगा फहराया

इंदौर 15 अगस्त। आज हर कोई कहता है अच्छे दिन आने वाले है, इसका मतलब हुआ कि हमारा वर्तमान ठीक नही है। भारतीयों को जापानियों से सीख लेना चाहिए। जहाँ के लोग एक दूसरे का हाथ पकड़कर चलते है। जिस दिन हम भी हाथ पकड़कर चलने लगेंगे तो अच्छे दिन आ ही जायेंगे। वर्तमान में लोग चादर छोटी होने पर पैर लम्बे कर सो रहे है और रो रहे है। बबूल के बीज बोकर आम चाह रहे इसलिए भारत रो रहा है। आजाद हो गए यह महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि यह महत्वपूर्ण है कि हम पराधीन क्यों हुए!

यह बात स्वाधीनता दिवस पर 15 अगस्त को इन्दौर स्थित महावीर बाग में गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज ने कही। वे यहां संत समागम के अवसर पर आयोजित सामूहिक प्रवचन में विशाल जैन समुदाय को संबोधित कर रहे थे।

आचार्यश्री ने खरगोश ओर कछुए की कहानी के माध्यम से कहा कि किसी और को दुख देकर सुख की कल्पना करना उचित नहीं। कछुए और खरगोश ने जीत–हार से परे एक अलग दौड़ लगाई और दोनों ही जीते और वह मिसाल बन गई। समाज में कुछ लोग खरगोश कि भाँति छलांग लगा रहे हैं तो कुछ कछुए की भांति धीरे चल रहे हैं।

आज जिस प्रकार से जैन समाज एक छत के नीचे एकत्र हुआ अगर चातुर्मास ही इस तरह मनाएं तो कितना अच्छा हो! वर्तमान में देश में जातिवाद का जहरीला वातावरण है। ऐसी स्थिति में हमने अपने आपको नही सम्हाला तो फिर कभी नहीं सम्हल सकते। जैन समाज की शक्ति को समझो। समाज की चिंता करो उसे स्वार्थ के साथ मत चलाओ।

संत समागम में दिगंबराचार्य श्री अनेकांतसागरजी महाराज ने कहा कि बरसों की पराधीनता से तो आजादी मिल गई । सही आजादी तो जीवन में कषायों से स्वतंत्र होना है। जैन धर्म चर्चा का नहीं चर्या का विषय है। अनेकता में एकता ही भारत की विशेषता है।

इससे पूर्व सभा को तपागच्छीय मुनि सम्यकचन्द्रसागरजी एवं साध्वी विश्वज्योतिश्रीजी ने भी संबोधित किया।

सभा में स्थानकवासी संत श्री गौतममुनिजी ने कहा कि हम महावीर को तो मानते है लेकिन महावीर के बताए मार्ग व सिद्धान्त को नहीं अपनाते। उन्होंने नारी की स्वतंत्रता के बारे में कहा कि नारी स्वतंत्र रहे अच्छी बात है लेकिन स्वछंदता से नही। आज मंदिरों में भी स्वछंदता हावी है। पहले घर को ही जिनालय बना लो तो संस्कार कायम रहेंगे। सभा में तीन हजार से अधिक श्रावक–श्राविका वर्ग उपस्थित था।

इन्दौर में तपस्या

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वजी म.सा., पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म., पूज्य बालमुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 4 एवं पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म., पू. साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 4 का चातुर्मास श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ इन्दौर के तत्वावधान में महावीर बाग में चल रहा है।

प्रवचनों में बडी संख्या में श्रद्धालु पधार रहे हैं। पूज्यश्री की निश्रा में मासक्षमण, सिद्धितप, सौभाग्य कल्पतरू तप, पंचपरमेष्ठी तप, सांकली तेला, आयंबिल तप आदि की आराधना चल रही है।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना करने के लिये बाहर से बडी संख्या में श्रद्धालु पधार रहे हैं।

ता. 4 अक्टुबर से पूज्यश्री सूरिमंत्र की साधना में प्रवेश करेंगे। सूरि मंत्र की तीसरी पीठिका की साधना करेंगे। 25 दिवसीय साधना की पूर्णाहुति के पश्चात् ता. 28 अक्टूबर को महामांगलिक प्रदान करेंगे।

गौरवशाली है खरतरगच्छ

इन्दौर 16 अगस्त। इन्दौर के महावीर बाग में चातुर्मास के दौरान श्रावण शुक्ला षष्ठी, दि. 16 अगस्त को पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने कहा– जिनशासन में खरतरगच्छ की परंपरा अलग से नहीं है। खरतरगच्छ परम्परा तो बरसों से चली आ रही है। समय व जरूरतों के अनुसार आचार्यों, गुरु भगवंतों द्वारा इसमें सुधार कर इसे आगे बढ़ाया है। खर से तात्पर्य खरा। तर से तात्पर्य खरों में खरे।

खरतरगच्छ सहस्राब्दी वर्ष पर्वोत्सव के अंतर्गत समाज के इतिहास को बताते हुए श्रावक श्राविकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि अपने गच्छ के प्रति समाजजनों में बहुमान होना चाहिए।

स्वाध्याय से ही बौद्धिक विकास संभव– इससे पूर्व आर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी महाराज ने कहा– हम अपने अतीत के गौरव को समझे और पूर्व महापुरुषों की विरासत का योग्य उपयोग करते हुए मन, वचन और काया को पवित्र करने का प्रयास करें। हमें हमारे बौद्धिक विकास को बढ़ाने के लिए स्वाध्याय को अपनाना होगा। बौद्धिक विकास साहित्य से हो सकता है। बुद्धि के विकास से स्वयं, घर, परिवार तथा समाज व राष्ट्र उन्नति के शिखर पर आरोहण करता है। चातुर्मास में श्रावण शुक्ल की षष्ठी तिथि को खरतरगच्छ जैन समाज द्वारा खरतरगच्छ दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य आम समाज को खरतरगच्छ की जानकारी तथा उद्देश्यों से रूबरू कराना होता है। धर्मसभा में सैंकडों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर खरतरगच्छ के गौरव को सुनकर अपना ज्ञान वर्धन किया।हजारों की संख्या में श्रावक–श्राविकाएं मौजूद थे।

शहादा में तप–कीर्तिमान

शहादा 26 अगस्त। शहादा नगरी के सुघोषाघंट मंदिर परिसर में खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी चम्पामण्डल प्रमुखा पू. गणिनीप्रवरा मारवाड़ ज्योति सूर्यप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी पूर्णप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी हर्षपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 के सानिध्य में चातुर्मास अंतर्गत तप की बहार चल रही है। श्री राहुल कुमार गौतमचंदजी लुणिया एवं श्री मदनलालजी रानुलालजी कोचर की पुत्रवधू श्रीमती सीमा जितेन्द्र कोचर के मासक्षमण की तपस्या संपन्न हुई। तप अनुमोदनार्थ प्रवचन एवं पच्चखान करवाये गये।

सिद्धितप के तपस्वी सौ. उषाबाई विजयकुमारजी लुणिया, सौ. चन्द्रिका जयन्तिलालजी सेठिया, सौ. अंजलीबाई कांतिलालजी लुणिया, सौ. प्रीति प्रवीणजी लुणिया, कुमारी एकता महावीरजी कोचर, कुमारी जागृति जयंतिलालजी सेठिया ने महान तपाराधन कर जीवन सफल किया। साथ सम्मेतशिखर तप में 45 से अधिक तपस्वियों ने जुडकर तप धर्म की आराधना की। तप के उपलक्ष में सांझी, स्वामी वात्सल्य आदि विविध आयोजन किये गए।

केयुप सूरत-2 के रक्तदान शिविर में 108 युनिट रक्तदान

सूरत 14 अगस्त। खरतरगच्छ गौरवशाली सहस्राब्दी वर्ष (विक्रम सम्वत १०७५–२०७५), स्वतंत्रता दिवस एवं युवाओं को एक मंच पर लाने वाले खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के प्रति आभार प्रकट करने के उपलक्ष में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद सूरत शाखा–2 द्वारा 14 अगस्त को राधा रमण टेक्सटाइल मार्किट सारोली के प्रांगण में पहली बार विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रक्तदान केम्प में रक्तदाताओं द्वारा 108 युनिट रक्तदान किया गया।

इस अवसर पर आर.आर.टी.एम. के मैनेजिंग डायरेक्टर धर्मभाई पटेल, उनके पुत्र धवनिल भाई पटेल, डॉक्टर अभिषेक यादव (बाबा मेमोरियल हॉस्पिटल), पराग भाई, पीयूष भाई (युनिटी हॉस्पिटल), पारसमल गोठी (संरक्षक बाड़मेर खरतरगच्छ जैन श्री संघ सूरत), गौतमचंद डूंगरवाल (अध्यक्ष बाड़मेर खरतरगच्छ जैन श्री संघ), चम्पालाल बोथरा (अध्यक्ष बाड़मेर जैन श्री संघ), रमेश बोहरा (अध्यक्ष महावीर इंटरनेशनल), राजू तातेड़, प्रकाश तातेड़ (बाड़मेर जैन युवा संघटन), गौतम बोहरा हालावाला (युवा परिषद कार्यवाहक अध्यक्ष), पुखराज संकलेचा (अध्यक्ष श्री माजीसा धाम सूरत), लीला छाजेड़ (अध्यक्षा अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद सूरत) सहित बाड़मेर जैन समाज के वरिष्ठ सदस्य, प्रतिष्ठित व्यापारी, सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ता एवं केयुप के युवा साथी उपस्थित थे।

गौतम मालू (केंद्रीय समिति सदस्य) के नेतृत्व में केयुप के सदस्यों ने पूरे दिन केम्प के दौरान अपनी सेवाएं दी। इस शिविर के लाभार्थी श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा हालावाला परिवार एवं श्रीमति धाईदेवी मेवारामजी घीया परिवार थे।

सभी रक्तदाताओं को प्रमाणपत्र के साथ आकर्षक उपहार दिया गया।

यह रक्तदान केम्प लोक समर्पण रक्तदान केंद्र एंड रिसर्च सेंटर वराछा के डॉक्टर अर्पण बलर के नेतृत्व में उनकी टीम के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

प्रेषक–चम्पालाल छाजेड़, प्रसार मंत्री, केयुप सूरत शाखा–2

केयुप नीमच शाखा समाचार

नीमच 15 अगस्त। नीमच शहर में पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसुरीश्वरजी म. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी गुणरंजनाश्रीजी म. की निश्रा में भगवान नेमिनाथ के जन्म कल्याणक दिवस व खरतरगच्छ के गौरवशाली 1000 वर्ष के उपलक्ष में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर में 111 युनिट रक्तदान हुआ। जिसमें नीमच के कलेक्टर श्रीमान राकेशजी श्रीवास्तव, श्रीमान तुषारकांतजी विद्यार्थी, मनासा के विधायक श्रीमान कैलाशजी चावला, नीमच के विधायक श्रीमान दिलीपसिंहजी परिहार, नीमच नगरपालिकाध्यक्ष श्रीमान राकेशजी(पप्पू) जैन, जिला पंचायत अध्यक्षा श्रीमती अवंतिका मेहरसिंहजी जाट, भाजपा जिला अध्यक्ष हेमंतजी हरित, CRPF के आई.जी. श्रीमान B.S. चौहान जी व जैन समाज के अध्यक्ष व ट्रस्टी गण की उपस्थिति में विशाल रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर के लाभार्थी परिवार स्व. श्रीमती राजबाईजी ख्यालीलालजी गोपावत परिवार के श्री रिखबजी गोपावत, श्री सुनीलजी गोपावत व श्री अनिलजी गोपावत द्वारा श्रीसंघ की नवकारसी का लाभ लिया। सभी संस्थाओं को सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

–कमलेश गोपावत, अध्यक्ष केयुप नीमच शाखा

खरतरगच्छ संघ भिवंडी की नवीन कार्यकारिणी का गठन

भिवंडी 31 अगस्त। दि. 31.8.18 को श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ भिवंडी ट्रस्ट मंडल की मीटिंग में नवीन कार्यकारिणी का गठन हुआ। अध्यक्ष– श्री अनिलकुमारजी रिखबदासजी छाजेड़, उपाध्यक्ष– श्री छगनलालजी नखतमलजी संखलेचा, सचिव– श्री राकेशकुमारजी वेदमलजी संखलेचा, कोषाध्यक्ष– श्री सुमेरजी मैयाचंदजी हुण्डिया, दादावाड़ी व्यवस्था मंत्री– श्री कैलाशकुमारजी चिमनीरामजी छाजेड़ आदि को जिम्मेदारी दी गई। नवनिर्वाचितों को बधाई।

केयुप अहमदाबाद शाखा समाचार

अहमदाबाद 16 अगस्त। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद द्वारा देश के स्वतंत्रता दिवस व खरतरगच्छ दिवस के रूप में देश के सैनिकों व मानव सेवा के कार्य में मेगा रक्तदान शिविर का भव्य आयोजन किया गया इस भव्य आयोजन में जेसीआइ शाहीबाग की सबसे बड़ी टीम ने अपना योगदान दिया, साथ ही चीफ गेस्ट सम्माननीय बाबुलालजी लुणिया का बहुमान दोनों संस्थाओं की ओर से किया गया।

खरतरगच्छाधिपति आचार्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसुरीश्वरजी महाराज के शुभ संदेश वांचन से आयोजन प्रारंभ किया गया। विशेष वरीष्ठ गणमान्य श्रावकों ने अपना योगदान अर्पण किया।

श्रीमान वंशराजजी भंशाली– अध्यक्ष शंखेश्वर जैन दादावाडी, श्रीमान दीपचन्दजी बाफना– कोषाध्यक्ष, जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी, श्रीमान अशोकजी भंशाली– राष्ट्रिय चेयरमैन, आखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद, श्रीमान अशोकजी बाफना– अध्यक्ष केयुप अहमदाबाद व खरतरगच्छ युवा परिषद अहमदाबाद व जे. सी.आई. पारसजी वडेरा, ओमप्रकाशजी संकलेशा, भूरजी धारीवाल, संजयजी धारीवाल, रतनजी वडेरा सहित शाहीबाग के कई वरीष्ठ व युवा भाईयों ने आयोजन को सफल बनाया। अनेक सदस्यों द्वारा 61 युनिट रक्तदान किया गया। सभी का सम्मान लाभार्थी समाजसेवी श्रावक माननीय श्री रतनलालजी हितेशकुमारजी हालावाले द्वारा किया गया। केयुप व जेसिआई दोनों संस्था को एक साथ एक मंच पर प्रथम बार देखकर सभी का मन खुश हो गया।

– अंकित बोहरा, प्रसार समिति केयुप–जेसीआई

दिल्ली के चांदनी चौक में उल्लास

दिल्ली 15 अगस्त। प्रभु श्री नेमिनाथ कल्याणक उपलक्ष में 15 अगस्त को श्री जैन खरतरगच्छ भवन, चांदनी चौक, दिल्ली में साध्वीवृंदों द्वारा श्री गिरनार तीर्थ के इतिहास का वर्णन लोगों को अंतर्मन तक आनंदित कर गया। उनके द्वारा प्रभु नेमिनाथ के तीर्थंकर भव के अनछुए पहलुओं को साझा किया जिससे अभी तक सभी अनभिज्ञ थे। पश्चात् बच्चों ने रंगारंग प्रस्तुतियां पेश कर उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। तत्पश्चात सामूहिक आयंबिल का आयोजन किया गया। जिसमें करीब 12 आयंबिल (बिना नमक), 35 नीवी तथा 50 खुली नीवि (एक समय नीवी का खाना) कर अपनी रसना पर नियंत्रण कर अत्यंत अनुमोदनीय कार्य किया।

– धनपत बोहरा (प्रचार मंत्री) केयुप दिल्ली शाखा

केयुप खापर शाखा समाचार

खापर 15 अगस्त। खरतरगच्छ गौरवशाली सहस्राब्दी वर्ष (विक्रम सम्वत १०७५–२०७५), स्वतंत्रता दिवस एवं युवाओं को एक मंच पर लाने वाले खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के प्रति आभार प्रकट करने के उपलक्ष में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद खापर शाखा द्वारा 15 अगस्त रक्तदान शिविर का आयोजन खापर में रखा गया।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन खापर श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री सुरेशचंदजी बोथरा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में 72 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए केयुप खापर शाखा अध्यक्ष अरविंद बोथरा व सभी सदस्यों ने परिश्रम किया।

खरतरगच्छ का उदभव कैसे हुआ, नाटिका का हुआ आयोजन

अंजार (कच्छ) 21 अगस्त। गुजरात के कच्छ की अंजार नगरी में सर्व प्रथम बार श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के तत्वावधान में खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी चम्पामण्डल प्रमुखा पू. गणिनीप्रवरा मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी हर्षप्रज्ञाश्रीजी म., अंजार–गौरव पू. साध्वीरत्ना नयनंदिताश्रीजी म. आदि ठाणा 7 की पावन निश्रा में खरतरगच्छ का उद्भव कैसे हुआ! आदि अनेक घटनाओं पर आधारित भव्य नाटिका शानदार तौर पर देखने सिर्फ अंजार के ही नहीं बाहर गाँव से भी पधारे!

इस नाटिका में संघ के छोटे, बड़े महिलाओं पुरुष, छोटे–छोटे बालक–बालिकाओं ने मिलकर घटनाओं को साक्षात्कार का रूप दिया! मुमुक्षु शुभम लुंकड़ ने जिनेश्वरसूरि का भावात्मक किरदार करते हुए गुरुदेव (सोमचन्द्र) के संयम ग्रहण पर नृत्य करके शुभम ने संयम के भावों में बहाया! जन मेदिनी ने जय–जयकार के नारे गुंजाये! सबका प्रदर्शन बहुत शानदार रहा!

गणिनी प्रवरा सूर्यप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्या अंजार–गौरव पूज्या साध्वी नयनंदिताश्रीजी म. का सिद्धि तप चल रहा हैं। खूब खूब साता पूछते है। पारणा 20.09.2018 को होगा। आप सभी गुरुभक्त पधार कर जिन शासन की शोभा बढ़ावे।

–प्रकाश चौहान

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ के पूरे भारत में अट्ठम की साधना

मालव प्रदेश के उज्जैन नगर में स्थित अतिप्राचीन चमत्कारी श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ की प्रतिष्ठा ता. 18 फरवरी 2019 को संपन्न होने जा रही है।

मूलनायक परमात्मा श्री अवन्ति पार्श्वनाथ प्रभु का उत्थापन किये बिना इस तीर्थ का संपूर्ण जीर्णोद्धार किया गया। विशाल रंगमंडप देखते ही बनता है। जो भी श्रद्धालु दर्शन करता है, वह परम धन्यता का अनुभव करता है।

यह जीर्णोद्धार पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में उनकी प्रेरणा से संपन्न हो रहा है।

तीर्थ की प्रतिष्ठा पूज्यश्री की ही निश्रा में संपन्न होगी। श्री अवन्ति तीर्थ के कार्य को विशेष रूप से गति देने के लिये गत वर्ष पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा का ऐतिहासिक चातुर्मास उज्जैन नगर में संपन्न हुआ। उनके पावन मार्गदर्शन में प्रतिष्ठा महोत्सव के कार्य को प्रारंभ किया गया। प्रतिष्ठा महोत्सव समिति की रचना की गई। जिसके अन्तर्गत समिति के अध्यक्ष श्री पारसजी जैन उर्जामंत्री म.प्र.शासन को बनाया गया। समिति के संयोजक संघवी श्री कुशलराजजी गुलेच्छा को बनाया गया। श्री पुखराजजी चौपडा को उपाध्यक्ष बनाया गया।

इसी चातुर्मास में प्रतिष्ठा मुहूर्त्त उद्घोषणा का चढावा संपन्न हुआ। बीकानेर जाकर पूज्यश्री से शुभ मुहूर्त्त प्राप्त किया गया। श्री नाहर परिवार ने उद्घोषणा का लाभ लिया।

इस तीर्थ की प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में संपूर्ण भारत में श्री अवन्ति पार्श्वनाथ की आराधना के अट्ठम अर्थात् तेले करवाये गये। बाडमेर, बालोतरा, फलोदी, इन्दौर, उज्जैन, नागोर, छापीहेडा, रतलाम, कच्छ, गुजरात, महाराष्ट्र, खानदेश, तमिलनाडु, कर्णाटक, दिल्ली, राजस्थान आदि प्रान्तों में बडी संख्या में तेले हुए। लगभग 700 से अधिक अट्ठम तप की आराधना संपन्न हुई।

सभी तपस्वियों का अवन्ति तीर्थ की ओर से बहुमान किया गया।

भुज में आयंबिल ओली तप निमित्ते महोत्सव

भुज (कच्छ) 25–27 अगस्त। भुज नगरी में खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी चंपाकली सूर्यरश्मि पू. स्नेहसुरभि पूर्णप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी मधुरिमाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की शुभ निश्रा में ता. 25.08 को पू. स्नेह सुरभि पूर्णप्रभाश्रीजी म. का 31वीं वर्धमान तप आयंबिल ओली तप निमित्ते जिनदत्त–कुशल महिला मंडल एवं बहु मंडल की तरफ से सांझी रखी गई! यह चातुर्मास जयानंद आराधना भवन जैन दादावाड़ी भुज में श्री भुज खरतरगच्छ जैन संघ के तत्वावधान में हो रहा है।

ता. 26.08.2018 को भुज दादावाड़ी से श्रीसंघ के साथ बाजे–गाजे से श्रीमती सरस्वतीदेवी श्री माणकचंदजी गांधी महेता के निवास स्थान पर पू. गुरूवर्याजी के पगलिया रखा गया ! वहां पर नवकारसी हुई। पूज्या गुरूवर्याजी का मंगलकारी प्रवचन हुआ! इसी बीच गांधी महेता परिवार द्वारा भुज खरतरगच्छ ट्रस्ट मंडल, जिनदत्त कुशल महिला मंडल, बहु मंडल एवं बाहर गांव से पधारे बाबुलालजी भंसाली मुम्बई, रतनलालजी जीरावला पूना, भरतभाई छाजेड़ नवसारी एवं मुमुक्षु शुभम लुंकड़, डिम्पल जैन और गुरुभक्त प्रकाश चौहान का बहुमान किया गया!

ता. 27.08.2018 को गुरुवर्याजी के 31वीं ओली तप निमित्ते रीटाबेन, रजनीभाई पटवा परिवार की तरफ से भव्य स्नात्र महोत्सव हर्सोल्लास के साथ संपन्न हुआ! 14 सपने माता को नृत्य द्वारा दिखाई गये! इस प्रसंग पर शासन माता को छप्पन भोग चढ़ाने के लिए शासन माता का थाल बहनों की प्रतियोगिता हुई!

इसी प्रंसग पर रजनीभाई रीटाबेन ने गुरुवर्याजी एवं श्रीसंघ की साक्षी से चतुर्थव्रत ग्रहण किया! ट्रस्ट मंडल, युवा मंडल, महिला मंडल बहु मंडल एवं आशीष भाई एवं पार्टी का महोत्सव में सहयोग रहा।

–प्रकाश चौहान

केयुप अक्कलकुवा शाखा समाचार

अक्कलकुवा 15 अगस्त। खरतरगच्छ गौरवशाली सहस्राब्दी वर्ष (विक्रम सम्वत १०७५–२०७५), स्वतंत्रता दिवस एवं युवाओं को एक मंच पर लाने वाले खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के प्रति आभार प्रकट करने के उपलक्ष में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद अक्कलकुवा शाखा की ओर से मेगा रक्तदान शिबिर का आयोजन किया गया। 45 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया।

इस कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि तहसीलदार श्री नितिनकुमार देवरे, पुलिस निरीक्षक श्री मेघश्याम डांगे, लोकनियुक्त सरपंच सौ. उषाबाई बोरा, जैन मूर्तिपूजक संघ अध्यक्ष श्री प्रेमचंद गोलेच्छा, स्थानकवासी संघ अध्यक्ष श्री भिकमचंद कोटड़िया, श्री जीवनलाल भंसाली, माजी उपसरपंच श्री विश्वासराव मराठे आदि मान्यवर उपस्तिथ थे। कार्यक्रम की शुरुआत भगवान महावीर स्वामी, सरस्वती देवी की प्रतिमा और भारत माता का पूजन व दीप प्रज्वलित किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए केयुप अक्कलकुवा शाखा के सभी पदाधिकारी व सदस्यों ने अपना योगदान किया।

–शुभम गौतमचंदजी भंसाली

श्री चम्पा बालिका मंडल द्वारा 'माँ की ममता हमें पुकारे' नाटिका प्रस्तुत की गयी

नंदुरबार 12 अगस्त। महत्तरा पदविभूषिता पू. श्री चंपाश्रीजी म. एवं पू. साध्वी श्री जितेंद्रश्रीजी म. की सुशिष्या धवलयशस्वी पू. साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी हेमरत्नाश्रीजी म., पू. साध्वी जयरत्नाश्रीजी म., पू. साध्वी रश्मिरेखाश्रीजी म., पू. साध्वी चारुलताश्रीजी म., पू. साध्वी नूतनप्रियाश्रीजी म., पू. साध्वी चारित्रप्रियाश्रीजी म. ठाणा 7 की पावन निश्रा में नंदुरबार नगर में चातुर्मास बड़े हर्ष उल्लास से चल रहा है। इस निमित्त अनेक धार्मिक कार्यक्रम, अनुष्ठान का आयोजन किया जा रहा है। हाल ही में 12 अगस्त को माँ की ममता हमें पुकारे.. जिसमें सौतेली माता पर आधारित एक सुंदर नाटिका श्री चंपा बालिका मंडल की बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत की गयी। जिसमें सगी माँ के मर जाने के बाद जब सौतेली माँ घर में आती है और बच्चों के साथ सौतेलेपन के व्यवहार पर आधारित इस नाटिका को जिस–जिस ने यह नाटिका देखी वह अपने आंसुओं को छुपा नहीं पाए। अंत में सगी माँ के दिये धार्मिक संस्कारों की वजह से सौतेली माँ का भी मन परिवर्तन हो जाता है।

यह नाटिका पू. साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्या पू. साध्वी नूतनप्रियाश्रीजी म. द्वारा लिखी गयी। इस नाटिका में दिव्या कोचर, हितेश्री छाजेड, काजल बाफना, सिमरन बाफना, मोक्षा श्रीश्रीमाल, हर्षा श्रीश्रीमाल, कामना जैन, मोहित जीरावला सह 20–25 नन्हीं–नन्हीं बालिकाओं ने अहम भूमिका निभाते हुए कार्यक्रम सफल बनाया। कार्यक्रम में शुभम भंसाली और सौ. दीपा बच्छावत ने अपने भाव व्यक्त किये। कार्यक्रम का मंच संचालन शिवानी छाजेड द्वारा किया गया। इस नाटिका से पूर्व प्रतिक्रमण की भाव यात्रा हुई जिसमें प्रतिक्रमण का महत्व आदि बताया गया।

15 अगस्त को खरतरगच्छ दिवस निमित्त दादा गुरुदेव के जीवन पर आधारित प्रस्तुति दिखाई गयी। साथ ही इस चातुर्मास में पूज्या गुरुवर्याश्रीजी के सानिध्य में अनेक धार्मिक तप–आराधना चल रही हैं. जिसमें प्रतिदिन प्रवचन, प्रतिक्रमण, ज्ञातासूत्र एवं मंजुला चरित्र का वांचन, शिबिर के माध्यम से बच्चों एवं महिलाओं का धार्मिक अध्ययन, समेदशिखर तप, अट्ठाई, मासक्षमण, आयंबिल, ओली, अट्ठम तप जैसे अनेक तप की आराधना चल रही है। सभी कार्यक्रम श्री सकल जैन श्रीसंघ नंदुरबार द्वारा आयोजित किये जा रहे है।

–शुभम भंसाली

तपस्वी मुनि वैराग्यसागरजी म. का स्वर्गवास

रायपुर 16 अगस्त। पूज्य मुनिराज श्री महेन्द्रसागरजी म.सा. के शिष्य मुनि श्री मनीषसागरजी म. के शिष्य रत्न पूज्य तपस्वी मुनि श्री वैराग्यसागरजी म. का समाधि पूर्वक दि. 16 अगस्त 2018 को रायपुर छ.ग. में स्वर्गवास हो गया। पिछले दिनों उनका स्वास्थ्य अस्वस्थ था। उन्हें केंसर हुआ था। अपार पीडा में भी वे आत्म समाधि में रहे। परमात्मा की भक्ति के स्तवन और आत्म बोध के भजन श्रवण करते–करते उन्होंने सद्गति प्राप्त की। उनकी समता साधना अनुमोदनीय थी।

उनका जन्म 28 दिसम्बर 1951 पौष वदि अमावस्या को महाराष्ट्र के गोंदिया नगर में हुआ था। उन्होंने 54 वर्ष की उम्र में भद्रावती तीर्थ में भागवती दीक्षा ग्रहण की थी।

उनका अग्निसंस्कार कैवल्यधाम में किया गया।

जहाज मंदिर परिवार अपनी हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

ज्ञानवाटिका बीकानेर का वार्षिक महोत्सव

बीकानेर 13 अगस्त। बीकानेर के महावीर भवन के विशाल हॉल में ज्ञानवाटिका का वार्षिक महोत्सव रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ मनाया गया। आयोजन स्थल को इतना सुंदर सजाया और समस्त मंच संचालन ज्ञानवाटिका के बच्चों द्वारा किया गया। उक्त आयोजन में अगर कोई नहीं देख पाया तो वह बच्चों के द्वारा आयोजित इतने सुंदर कार्यक्रम को देखने से चूक गया। केयुप अध्यक्ष श्री राजीव खजांची ने ज्ञानवाटिका संभालने वाले केयुप के सभी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद के साथ आभार व्यक्त किया। वे अपना अमूल्य समय जो कि धन देने से ऊपर का सहयोग है, आप सभी एक बार उन कार्यकर्ताओं को थम्सअप जरूर करे। आने वाली खरतरगच्छ की भावी पीढ़ी को तैयार करने वाली केयुप टीम को बधाई। आप थम्स अप करें ना करे पर मन से सहयोग की भावना जरूर रखे।

रक्तदान शिविर।

15 अगस्त। खरतरगच्छ गौरवशाली सहस्राब्दी वर्ष (विक्रम सम्वत १०७५–२०७५), स्वतंत्रता दिवस एवं युवाओं को एक मंच पर लाने वाले खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के प्रति आभार प्रकट करने के उपलक्ष में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद बीकानेर शाखा की ओर से 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक श्री महावीर भवन बीकानेर में रक्तदान शिबिर आयोजित किया गया। शिविर के लाभार्थी मोतीचन्दजी नरेन्द्रजी खजांची की स्मृति में कान्ता देवी, राजीवजी, रेनुजी, दिव्या, झलक खजांची परिवार, बीकानेर ने सभी अतिथियों एवं रक्तदाताओं का आभार मानते हुए आयोजन हेतु केयुप सदस्यों को बधाई दी।

डोंबीवली में उल्लास का वातावरण

डोंबीवली 15 अगस्त। पूज्या साध्वी डॉ प्रियश्रद्धांजनाश्री जी म., साध्वी प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म., साध्वी प्रियशैलांजनाश्रीजी म. की निश्रा में डोंबीवली में अष्टप्रातिहार्य सहित परमातमा का महापूजन का आयोजन धुमधाम से हुआ।

15 अगस्त को नेमिनाथ परमात्मा के जीवन पर प्रतियोगिता रखी गई । महिला शिविर प्रति शनिवार एवं प्रति रविवार बच्चों के एकासने एवं शिविर होता है।

दुर्ग में मासक्षमण

पूजनीया मरुधरज्योति साध्वी मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में दुर्ग– मालवीय नगर में तपस्या की बहार छाई हुई है। श्री निर्मलजी कोठारी, श्रीमती उर्मिला कोठारी, श्रीमती सज्जन देवी मरोटी, श्रीमती प्रीति मरोटी, श्रीमती पूजा बैद, श्रीमती वंदना दुगड, श्रीमती नीता दुगड ने मासक्षमण की महान् तपस्या की है। साथ ही शत्रुंजय तप की तपस्या भी संपन्न हुई। तपस्या के उपलक्ष्य में ता. 25 अगस्त को मंगल गीतों का आयोजन किया गया। ता. 26 को वरघोडा निकाला गया। तपस्वियों का बहुमान किया गया। दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई, जाप किया गया। स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। रात्रि में भक्ति संध्या आयोजित की गई। जिसमें इन्दौर के लवेश हिमांशु बुरड ने भक्ति रंग जमाया।

बाड़मेर में बह रही ज्ञान-गंगा-धरा

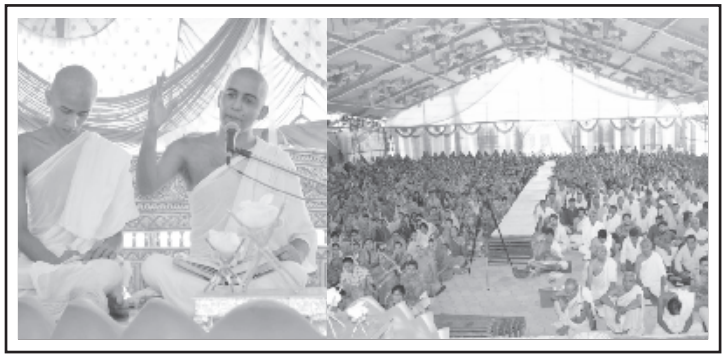

बाड़मेर। पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरिजी महाराज साहब के शिष्यरत्न पूज्य विपुल साहित्यसर्जक मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म., तपस्वी मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. एवं मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. का बाड़मेर नगर में भव्यातिभव्य चातुर्मास गतिमान है। चातुर्मासिक प्रवचनों में नित्य ही विशाल जनसमूह के रूप में लगभग 1300 लोग उपस्थित रहते हैं।

पू. मुनि भगवंत की निश्रा में अनेकानेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें पुणिया श्रावक की सामायिक, खरतरगच्छ उत्पत्ति, नेमिनाथ दीक्षा कल्याणक महोत्सव किये गये। पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक के अवसर पर पार्श्वनाथ तीर्थ भावयात्रा, 22 परिषहों की संगीतमय विवेचना इत्यादि, 18 पाप स्थानक आलोचना, अनेक विषयों पर प्रवचन चले। रविवार को होने वाले प्रवचनों में लगभग 2000 की तादाद में लोग उपस्थित हो रहे हैं।

रोज सुबह 6.30 से 7.00 बजे तक जैन जीवन शैली की Class भी निरंतर गतिमान है। तपस्या का अनोखा ठाठ लगा हुआ है। सिद्धितप, श्रेणीतप, गणधर तप, सांकली, अट्ठम, सांकली एकासना इत्यादि तपस्याओं का सुन्दर माहौल बना हुआ है। गणधर तप में 170 आराधक, सिद्धि तप के 10, श्रेणि तप में 10 आराधक जुड़े है। विपुल बोथरा, सचिन मालू, अभिषेक धारीवाल, हिमानी भंसाली, मुस्कान वड़ेरा, के 8, 9, 19, 16 उपवास की तपस्या सम्पन्न हुई।

इसमें भी सबसे विशिष्ट बाड़मेर के रत्न तपस्वी मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. के 11 उपवास की तपस्या शातापुर्वक सम्पन्न हुई। उनके पारणे का लाभ सामायिक एवं नवकारवाली में बोला गया जिसके दोनों लाभ श्रीमती चन्द्रादेवी बाबुलालजी बोहरा ने लिये।

19 अगस्त को 4 घण्टे तक चले कल्याण मंदिर महापूजन में 170 जोड़ो ने पूजन किया। 17-18-19 अगस्त को अवन्ति पार्श्वनाथ के सामूहिक तेले हुए जिसमें 108 लोगों ने तेला का तप किया। दोपहर में भी तत्त्वज्ञान की कक्षा चल रही है।

नूतन साहित्य प्रकाशन

विपुल साहित्य सर्जक मुनिवर श्री मनिप्रभसागरजी म. की लेखन यात्रा स्वाध्याय-प्रेमयों और साहित्य-भण्डारों को निरन्तर समृद्ध बना रही है। उनके द्वारा लिखित वीतराग स्तोत्र का विवेचन पन्नीय है। कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य भगवंत द्वारा लिखित संस्कृत काव्य वीतराग स्तोत्र वह पाठ है, जिसका स्वाध्याय किये बिना सम्राट् कुमारपाल मुँह में पानी तक नहीं डालते थे।

अतिशय, दर्शन, भक्ति, भावना आदि विषयों से परिपूर्ण वीतराग स्तोत्र पर हिन्दी में विवेचन का कार्य मुनिश्री द्वारा किया गया है। इसमें खरतरगच्छीय श्री प्रभानंदसूरि द्वारा लिखित वृत्ति का भी उपयोग किया गया है। वीतराग स्तोत्र की हिन्दी विवेचना दो भागों में प्रकाशित हुई है। दोनों भागों में दस-दस प्रकाशों की मधुर, रसपूर्ण एवं प्रवाहमयी विवेचना अरिहंत परमात्मा के गुणों के प्रति समर्पित बनाती है। इनके साथ क्षमा श्रमण महावीर के जीवन पर आलेखित नया प्रकाशन भी पठनीय है! ये पुस्तके जहाज मंदर-कार्यालय पर उपलब्ध है!

Open Book Exam का आयोजन

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ बाड़मेर एवं श्री स्वर्णिम चातुर्मास 2018 व्यवस्था समिति बाड़मेर द्वारा आयोजित Open Book Exam परम पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा लिखित 'साधना का ऐश्वर्य, चेतना का माधुर्य' पुस्तक में लगभग 75-80 खरतरगच्छ के आचार्य-उपाध्याय आदि के जीवन से जुड़ी घटनाएँ, उनके द्वारा सम्पन्न किये गये शासन के अनेक कार्यों का उल्लेख है। यह पुस्तक हमारे शासन को दैदीप्यमान करने वाले ऐसे गुरु भगवंतों के जीवन से जुड़ी घटनाओं का अनोखा खजाना है।

यह पुस्तक Open Book Exam के प्रशनपत्र सहित 50 रू. में उपलब्ध है।

प्रथम 5 सर्वाधिक अंक लाने वाले प्रतियोगियों को क्रमशः 7100, 5100, 4100, 2100 और 2100 रू. का ईनाम भेंट किया जायेगा।

संपर्क सूत्रः केवलचन्द छाजेड़- 9950830983, रजत सेठिया- 7232888989, अमित बाफना- 9743311684, सुनील छाजेड़- 9351668064

फलौदी में तपस्या

फलोदी 11 अगस्त। आगम ज्योति पू. प्रवर्तनी श्री प्रमोदश्रीजी म. की सुशिष्या बहिन म. साध्वी श्री डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की निश्रा में साध्वी डॉ. विज्ञांजनाश्रीजी म. की अट्ठाई की तपश्चर्या का पारणा सानंद सम्पन्न हुआ।

साध्वीजी एवं अ.सौ. श्रीमती सीमा रवीन्द्र बच्छावत के 16 उपवास, श्रीमती सुनीता प्रदीप बच्छावत, श्रीमती आरती मनोज बच्छावत तथा कुमारी प्रिया हेमचन्द्र बच्छावत की अट्ठाई के उपलक्ष्य में निर्मलाबाई रतनचन्दजी बच्छावत परिवार की ओर से 11 अगस्त को वरघोडे का भव्य आयोजन किया गया।

तपस्वी परिवार के निवास स्थान से प्रारंभ हुआ जुलूस प्रमुख मंदिरों के दर्शन करता हुआ पुनः ओसवाल न्याती नोहरे में पहुंचा! न्याती नोहरे में तपस्वी बहनों का परिजनों एवं संघ के द्वारा भव्य सम्मान किया गया। दर्शकों की आँखों में प्रसन्नता का भीगापन छलक उठा जब गुरुवर्याश्री बहिन म. ने पाट से उतरकर अपनी शिष्या विज्ञांजनाश्री को कामली ओढाकर अभिनंदन करते हुए वात्सल्य से भरकर गले लगा लिया। तपस्या के उपलक्ष्य में निर्मला देवी रतनचन्दजी बच्छावत परिवार की ओर से नवकारसी का आयोजन किया गया। स्मरण रहे संपूर्ण चातुर्मास का लाभ साध्वीजी श्री विज्ञांजनाश्रीजी म. के सांसारिक माताजी निर्मलादेवी रतनचन्दजी बच्छावत ने प्राप्त किया है।

38वीं ओली का पारणा संपन्न - पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने प्रवेश के साथ ही वर्धमान तप की 38वीं ओली की तपस्या प्रारंभ की। उनका पारणा 29 अगस्त 2018 को संपन्न हुआ।

श्रद्धांजली

श्री मिलापचंदजी कोठारी का समाधिमरण

महासमुन्द निवासी श्री मिलापचंदजी कोठारी का इन्दौर नगर में चातुर्मासिक चतुर्दशी के पर्व दिन को समाधि पूर्वक स्वर्गवास हो गया।

श्री मिलापचंदजी कोठारी पिछले तीन वर्षों से श्री शांतिलालजी श्रीश्रीमाल के साथ पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में ही चातुर्मास की आराधना कर रहे थे। यह उनका चौथा वर्ष था। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता होने पर भी दृढ निश्चय के साथ वे इन्दौर पधारे।

चातुर्मास चतुर्दशी के पावन पर्व के अवसर पर उन्होंने सामायिक ग्रहण की। प्रतिक्रमण प्रारंभ कर रहे थे कि उनका स्वर्गवास हो गया। वे कुर्सी पर बैठे थे और वहीं उन्होंने अपना देह त्याग किया।

श्री कोठारीजी स्वाध्यायी थे, पिछले कितने ही वर्षों से महाकौशल मूर्तिपूजक संघ के अन्तर्गत पर्युषण महापर्व की आराधना करवाने के लिये अलग अलग शहरों में जाते थे।

पूज्यश्री ने कहा– उनका यह समाधिमरण दुर्लभ है। अपने अन्तिम समय में किसी भी प्रकार की सेवा नहीं कराई। बिना किसी व्याधि के वे विदा हो गये। सामायिक में प्रतिक्रमण के भावों से भरकर उन्होंने प्रस्थान किया। यह उनकी सद्गति का सूचक है। जहाज मंदिर परिवार उन्हें हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

श्रीमती चंदनबाला चौधरी का स्वर्गवास

देपालपुर निवासी श्री केसरीचंदजी की पुत्रवधू एवं श्री विमलचंदजी की धर्मपत्नी श्रीमती चंदनबालादेवी चौधरी का पालीताना में समाधिपूर्वक स्वर्गवास हो गया।

वे पालीताना में चातुर्मास की आराधना करने हेतु गये थे। 13 अगस्त को प्रतिक्रमण करते–करते उनका समाधिमरण हो गया। उन्होंने स्वयं सामायिक ली, सात लाख की पाटी भी उन्होंने आदेश मांगकर बोली थी। इस प्रकार मिच्छामि दुक्कडं देकर वे विदा हो गई।

दादा गुरुदेव की परम भक्त श्रीमती चौधरी ने अपने जीवन में सिद्धि तप, वर्षीतप, उपधान तप, 45 आगम तप आदि अनेक तपस्याऐं की थी।

ज्ञातव्य है कि देपालपुर में इसी चौधरी परिवार की ओर से स्वद्रव्य से दादावाड़ी का निर्माण 31 वर्ष पूर्व किया गया था। अभी इसका पूरा जीर्णोद्धार पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में संपन्न हुआ है। प्रतिष्ठा चातुर्मास पश्चात् होगी। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

खेतिया नगर में विशाल रक्तदान शिविर संपन्न 162 युनिट रक्तदान हुआ

खेतिया 15 अगस्त। पू. खरतरगच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद खेतिया शाखा के द्वारा खरतरगच्छ के 1000 वर्ष होने पर एवं स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में मेगा रक्तदान का आयोजन किया गया। जिसमें समाज के हर वर्ग से रक्तदान करके सहयोग प्रदान किया!

रक्तदान शिविर का उद्घाटन नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती चंदनबाई अरविंदजी बागुल एवं प्रभारी B.M.O. डॉ राजेशजी ढोले, पत्रकार संघ के अध्यक्ष श्री राजेशजी नाहर व डॉक्टर एसोसिएशन अध्यक्ष डॉ घनश्यामजी पाटील द्वारा किया गया! तथा मूर्तिपूजक श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री महिपालजी नाहर द्वारा द्वीपज्योति प्रज्ज्वलित की गई! जिला ब्लड बैंक द्वारा शिविर में आये हुए रक्त दानदाताओं का रक्त लिया गया! जिसमें विशिष्ट खून वर्ग वालों ने भी अपना रक्तदान किया।

खरतरगच्छ युवा परिषद के अध्यक्ष सौरभ नाहर और उनके साथियों ने, जिनकी मेहनत से रिकॉर्ड तोड़ 161 युनिट रक्तदान हुआ! खरतरगच्छ युवा परिषद के साथी विकास चोपड़ा, मयूर चोपड़ा, राहुल भंसाली, उमेद पारख, मयूर चोरडिया, अनिल चोपड़ा, हर्ष चोरड़िया, जय बाफणा, विनय नाहर, विनय भंसाली, जय भंसाली, कुशल भंसाली, समीर पारख, योगेश चोपड़ा, निखिल भंसाली, दिलीप पारख, श्रेयांस नाहर के साथ मेडिकल एसोसिएशन खेतिया का सहयोग रहा!

अ.भा. खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा का सदस्यता अभियान जारी

–संतोष गोलेच्छा, महासचिव

खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोतीलालजी झाबक, मैं, सदस्य श्री सुरेशजी कांकरिया व श्री निर्मलजी मुणोत का एक प्रतिनिधि मण्डल ने गच्छीय साधु–साध्वीजी भगवंत, तीर्थ दर्शन तथा प्रतिनिधि महासभा के सदस्यता अभियान के लिए दिल्ली, जोधपुर, ओसियांजी, लोहावट, फलोदी, जैसलमेर, ब्रह्मसर, लोदरवा, अमरसर, बाड़मेर, बालोतरा, तथा चातुर्मास में संपन्न हो रही विभिन्न आराधना–साधना के लिए अनुमोदना प्रगट करने 20.08.18 से 26.08.18 तक यात्रा की।

प्रतिनिधि मण्डल ने अपनी यात्रा की शुरूआत दिल्ली के छोटी दादावाडी में बिराजित पू. साध्वी सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा–2 के दर्शन से की व सदस्यता हेतु चर्चा हुई। मौसम के कारण हम लोग तीन घंटा विलंब से पहुँचे इसलिये म.सा. ने लौटते समय आने का भाव रखने का कहा ताकि संघ व उनके पदाधिकारी व्याख्यान में उपस्थित रहते हैं, उनसे अनुरोध करने के लिए कहा गया।

दिल्ली के पश्चात प्रतिनिधि मण्डल 21.08.18 को सुबह जोधपुर के कम्युनिटी सेंटर में विराजित पू. साध्वी शुभदर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा–3 के व्याख्यान में उपस्थित हुए। पश्चात पू. म.सा एवं संघ के अध्यक्ष श्री भूरचंदजी जीरावला, सचिव राजेन्द्रजी भंसाली, सहसचिव विवेक भंसाली, सदस्य श्री दानमलजी जैन आदि से मुलाकात कर सदस्य बनने एवं अभियान को जोधपुर में शुरू करने का आग्रह किया।

जोधपुर से ओसियां तीर्थ एवं माजीसा के दर्शन कर लोटावट में विराजित पू. साध्वी श्रद्धान्विताश्रीजी म. आदि ठाणा–2 के दर्शन कर वहां चातुर्मास की व्यवस्था देख रहे श्री गौतमजी वैद आदि से मुलाकात कर फलोदी पहुंचे।

फलोदी के जैन न्याती नौहरा में विराजित बहिन म. पू. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ठाणा–5 के चरणों में वंदना करते हुए सुखशाता पूछी। म.सा. ने प्रतिनिधि महासभा के गतिविधियों की जानकारी ली, एवं आगे के कार्यक्रम की रूपरेखा पर मार्गदर्शन किया। दिनांक 22.08.18 को व्याख्यान का लाभ लेकर संघ के अध्यक्ष श्री जवरीलालजी बच्छावत, श्री रवीन्द्रजी नाहटा, श्री रमेशजी गोलेच्छा, श्री प्रदीपजी बच्छावत, श्री रवीन्द्रजी बच्छावत सहित सकल संघ से प्रतिनिधि महासभा के सदस्य बनने का अनुरोध किया गया।

फलोदी से जैसलमेर, ब्रह्मसर, लोदरवा, अमरसर होते हुये रात्रि विश्राम कुशल वाटिका बाड़मेर में किया। दि. 23.08.18 को पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा–4 के दर्शन–वंदन कर जिनवाणी का श्रवण किया तथा संघ के आगेवान श्री रतनलालजी संकलेचा, श्री मदनजी मालू, श्री बाबूलालजी बोथरा, श्री बाबूलालजी संकलेचा, श्री लूणकरणजी नाहटा, श्री सम्पतजी मालू से सदस्य बनाने पर चर्चा की एवं पू. मुनिश्री समयप्रभसागरजी म.सा को बड़ी तपस्या की साता पूछकर बाड़मेर नगर में ही विराजित पू. साध्वी सुरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा–7 का एवं अंचलगच्छ के आचार्य श्री कवीन्द्रसागरसूरिजी म. आदि ठाणा के दर्शन वंदन का लाभ लिया। कुशल वाटिका में नव निर्माणाधीन श्री जिनकुशलसूरि गुरुदेव की 108फीट की विशाल दादावाडी, मूर्ति, म्यूजियम आदि कार्य का अवलोकन कर बालोतरा में विराजित पूज्या साध्वी नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा–3 के दर्शन कर रात्रि–विश्राम नाकोडा तीर्थ में किया।

24.08.18 को नाकोडा में वासक्षेप पूजा कर व्याख्यान के समय बालोतरा पहुंचकर जिनवाणी का लाभ लिया एवं वहां के अध्यक्ष श्री मदनजी चोपडा, श्री अमृतजी सिंघवी, श्री जितेन्द्रजी गोलेच्छा, श्री लालचंदजी आदि से भी चर्चा की गई। सभी ने प्रतिनिधि महासभा का सदस्यता अभियान में सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया, एवं अधिक से अधिक सदस्य बनाकर भेजने का विश्वास दिया। हमारे साथ फलोदी से बालोतरा तक नीमच निवासी श्री सुनीलजी गोपावत एवं श्री मनोजजी अपने परिवार सहित थे। बालोतरा से जोधपुर के श्री बाड़मेर जैन समाज में विराजित पू. साध्वी प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा–4 के दर्शन वंदन कर संघ के अध्यक्ष श्री वेदमलजी मालू, उपाध्यक्ष श्री शंकरलालजी बोहरा, सचिव श्री जसराजजी बोथरा, सहसचिव श्री प्रभुलालजी छाजेड, कोषाध्यक्ष श्री पुखराजजी सिंघवी से मुलाकात हुवी। सभी से प्रतिनिधि महासभा के सदस्य बनने का अनुरोध किया गया।

25.08.18 को पुनः दिल्ली स्थित छोटी दादावाडी में पू. साध्वी सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा के दर्शन कर व्याख्यान का लाभ किया एवं संघ के अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी राक्यान, श्री विरेन्द्रजी मेहता, केयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रतनजी बोथरा, दिल्ली केयुप अध्यक्ष श्री मनीषजी नाहटा, श्री प्रवीणजी चोरडिया, श्री प्रदीपजी नाहटा, श्री राकेशजी नाहटा, आदि से भी प्रतिनिधि महासभा के सदस्य बनाने पर चर्चा की गयी। पश्चात प्रतिनिधि महासभा के संस्थापक सदस्य श्री सम्पतराजजी बोथरा एवं श्रीमति सुमन हीरालालजी मुशर्रफ से भी मुलाकात की। आप दिल्ली के समाजिक कार्य में काफी सक्रिय है।

केयुप चेन्नई शाखा द्वारा ब्लड कैम्प आयोजन सम्पन्न

चेन्नई 15 अगस्त। खरतरगच्छ गौरवशाली सहस्राब्दी गौरव वर्ष (विक्रम संवत 1075-2075), स्वतंत्रता दिवस एवं युवाओं को एक मंच पर लाने वाले खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के प्रति आभार प्रकट करने के उपलक्ष में सम्पूर्ण देश में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद की शाखाओं द्वारा मेघा रक्तदान शिविर का आयोजन एक ही दिन 15 अगस्त को किया जा रहा है। इसी त्रिवेणी संगम के पावन खुशी के अवसर पर अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद चेन्नई शाखा द्वारा 15 अगस्त को सिवांची जैन भवन के प्रांगण में पहली बार विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ आचार्य श्री जिनपूर्णानंदसूरिजी म.सा. एवं साध्वी श्री तरुणप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा के मंगलाचरण से शुरु हुआ। रक्तदान केम्प में रक्तदाताओं द्वारा 121 यूनिट रक्तदान किया गया। इस अवसर जिनदत्तसूरि मण्डल के अध्यक्ष रंजीत गोलेछा, सिवांची जैन संघ के अध्यक्ष नेमीचंदजी कटारिया रांका, गौतमजी बैद, शांतिलालजी गोलेच्छा, उत्तमचंदजी रांका, लक्ष्मीराजजी बच्छावत, महेन्द्रजी कोठार, गुलराज बुरड़, राजकुमार संकलेचा, नेमीचंद देशरला, अशोक लोढा, एवं केयुप के अध्यक्ष सुरेश लुनिया, उपाध्यक्ष राजेश गोलेच्छा, सचिव महेन्द्र गोलेच्छा, कोषाध्यक्ष गौतम संकलेचा, संजय बैद, गौतम बच्छावत, मनोज झाबक, महावीर लुंकड़, धीरज बोथरा, मनोज झाबक, भूपेश रांका, मुकेश संकलेचा, पवन छाजेड सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे।

Kयुप के सभी सदस्यों ने पूरे दिन केम्प के दौरान अपनी सेवाएं दी।

इस शिविर के लाभार्थी श्रीमती मोहिनीदेवी समरथमलजी रांका परिवार गोल उम्मेदाबार थे। Kयुप द्वारा लाभार्थी परिवार का बहुमान किया गया। सभी रक्तदाताओं को प्रमाणपत्र दिया गया। यह रक्तदान केम्प राइट हॉस्पिटल ब्लड बैंड के सहयोग से सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष सुरेश लुनिया ने पधारे हुए सभी अतिथियो रक्तदाताओं एवं केयूप के सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया।

प्रेषक: गौतम संकलेचा चेन्नई

प्रचारक- अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद केंद्रीय

केयुप इचलकरंजी के समाचार

इचलकरंजी 15 अगस्त। पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद केयूप अपनी स्थापना से ही समाज सेवा, जीव दया, साधु साध्वी वेयावच्च विहार सेवा, ज्ञान वाटिका द्वारा संस्कार वर्धन, स्वाध्याय शिविरों द्वारा पर्युषण आराधना, वांचना शिविरों द्वारा ज्ञान सेवा आदि क्षेत्रों में निरन्तर अपना अवदान दे रहा है।

जिनशासन की प्रमुख धारा खरतरगच्छ अपना (1000) सहस्राब्दी गौरव वर्ष मना रहा है। इस निमित्त सभी शाखाओं ने महा रक्तदान शिविर के आयोजन के साथ मनाने का निश्चय किया है। इसी कड़ी में इचलकरंजी शाखा ने भी 15 अगस्त को गायों को चारा एवं 17 अगस्त को रक्तदान शिविर का आयोजन रखा। शिविर मणिधारी भवन में रखा गया।

प्रोजेक्ट संयोजक श्री सुरेशजी ललवानी, चेयरमैन श्री रमेशजी भंसाली, अध्यक्ष मदनजी सिंघवी, उपाध्यक्ष श्री प्रवीणजी ललवानी, महासचिव श्री दिनेशजी मालू एवं रमेश लुंकड़, अरुण ललवानी, पीयूष सेठिया, अमृत छाजेड़, मनीष लुंकड़, शैलेश-संकेश ललवानी, रवि छाजेड़, रमेश छाजेड़, सुरेश बोथरा, दिनेश बोहरा, राजू बोथरा, पुरषोत्तम संकलेचा, मुकेश संकलेचा, अशोक संकलेचा, तेजराज भंसाली नितेश छाजेड़ आदि बड़ी संख्या में केयूप सदस्यों की उपस्थिति रही।

सूरत में तपस्या की लहर

सूरत नगर में पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय भगवंत श्री मनोज्ञसागरजी म. एवं पू. मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. तथा पू. साध्वी अनंतदर्शनाश्रीजी म. ठाणा 3 का चातुर्मास श्री बाडमेर जैन संघ, सूरत के तत्वावधान में कुशल दर्शन दादावाड़ी प्रांगण में ऐतिहासिक रूप से चल रहा है।

पूज्यश्री के प्रवचनों में भीड लगी रहती है। पूज्यश्री की प्रेरणा से मासक्षमण आदि विविध तप बडी संख्या में जारी है। पूज्यश्री की निश्रा में तपस्या की लहर चल रही है। जिसकी घोषणा दि. 31 अगस्त को गुरुदेव ने की। जिसमें श्री भरतकुमारजी पारसमलजी गोलेछा हाथीतला बाड़मेर के 33वां (51 की भावना), श्रीमती पिंकीदेवी अशोककुमारजी संकलेचा के 13 वां (31 की भावना) और साध्वी विश्वदर्शनाश्रीजी म. के 13वां उपवास (31 की भावना) हैं। तीनों तपस्वी एक ही परिवार के हैं।

इसके अलावा 50दिवसीय पंच परमेष्ठी श्रेणि तप, आयम्बिल, उपवास, एकासना, सांकलिया तेला, रोजाना 5 बहनों को एक उपवास की शृंखला के अलावा और भी कई श्रद्धालुओं की बड़ी तपस्या चल रही हैं। —चम्पालाल छाजेड़ सूरत

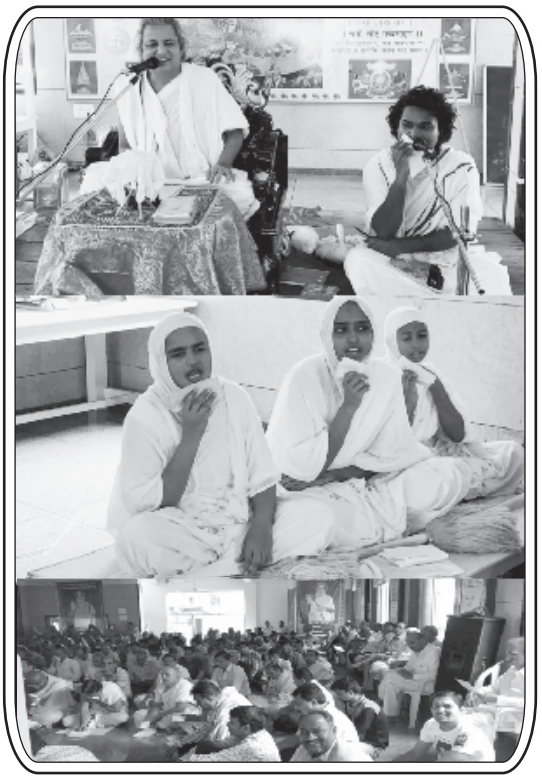

खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा बाढ़ पीड़ितों को सहायता

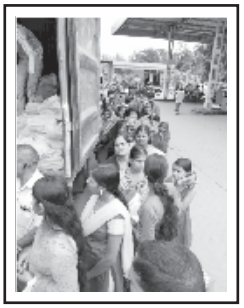

बैंगलोर 24 अगस्त। श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बसवनगुड़ी बैंगलोर एवं श्री जिनदत्त कुशलसूरि जैन सेवा मंडल से एक टीम बाढ़ पीड़ितों की सहायता हेतु केरल के मानन्तवाड़ी जिले में पहुँची।

खरतरगच्छ संघ एवं युवा परिषद् के अनेक दानदाताओं द्वारा प्राप्त सहयोग राशि से वहाँ पर जरूरतमन्दों को नाईटी, टी-शर्ट, लुंगी, झाड़ू, पानी की बोतलें, ब्लीचिंग पाउडर, बिस्किट्स आदि व्यवस्थित तरीके से वितरित किया गया।

वितरण टीम में गौतम कोठारी, दिनेश संकलेचा, हेमन्त गुलेच्छा, नीलेश मेहता, अल्केश पगारिया, कल्पेश लुंकड़ आदि उपस्थित थे। परिवहन व्यवस्था शर्मा ट्रान्सपोर्ट द्वारा उपलब्ध करवाई गई। इसी के साथ सामाजिक संस्था 'माध्यम' का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

इससे पूर्व खरतरगच्छ सहस्राब्दी वर्ष 1000 वाँ वर्ष के कार्यक्रमों के अन्तर्गत 12 अगस्त सुबह 9 बजे श्री जिनकुशलसूरि जैन आराधना भवन बसवनगुड़ी बैंगलोर में पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में एक भव्य नाटक 'जिनेश्वरसूरि आप खरे हो' का मंचन किया गया। जिसमें खरतर बिरूद धारक श्री जिनेश्वरसूरीश्वरजी म. सा. के जीवन चरित्र को नाट्य-रूपान्तरण द्वारा दर्शाया गया।

गुवाहटी (आसाम) में चातुर्मास प्रवेश का ठाट

छाई खुशहाली आसाम की हवाओं में...
खुशबु फैली है गुवाहटी की फिजाओं में...
उत्साह उमंग की बहार आई है गुरूवर्या श्री की निश्रा में...
तप-त्याग ज्ञानाराधना से धरा महकेगी वर्षावास में...
जिनशासन की ध्वजा फहरेगी जन-जन की जीवन बगियां में...

गुवाहाटी नगरी में खरतरगच्छाधिपति पू. गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. गणिनीपद विभूषिता गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म., तपोरत्ना पू. सुलक्षणा श्रीजी म. की विदुषी सुशिष्या पू. समतामूर्ति प्रियस्मिताश्रीजी म., पू. डॉ. प्रियलताश्रीजी म., पू. डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 का मंगल प्रवेश वर्षा की रिमझिम फुहार व प्रकृति सौंदर्य से हरे-भरे आसाम की राजधानी सिंहद्वार गुवाहाटी महानगरी में खरतरगच्छीया साध्वीश्री का प्रथम चातुर्मास पाकर गुवाहाटी वासियों का मन उत्साह उमंग से प्रमुदित है। आनंद से सराबोर है।

विहारयात्रा के दरमियान उत्तरप्रदेश, बिहार, नेपाल, बंगाल, बांग्ला देश सीमा, आसाम फरसना करते हुए गांव-गांव, नगर-नगर, डगर-डगर में धर्म अलख जगाई है, जगह-जगह खुशियों की लहर छा गई, स्थान स्थान पर लम्बी कतार में मंगल प्रवेश संपन्न हुए। गुहावाटी में आपके पदार्पण से सभी का तन हर्षित व मन फुलकित है पलक पावड़े बिछाये सकल संघ हाजिर था। आपश्री परमात्मा पार्श्वनाथ जिनमंदिर की नवमी ध्वजा पर प्रथम बार पधारें, तब भी श्रीसंघ में खुशहाली छा गई। त्रिदिवसिय कार्यक्रम में गुरुवर्याश्री एवं इन्दौर से पधारे विजय भाई बनवट ने भक्ति की रमझट मचाकर भक्ति में जनता को मंत्र मुग्ध कर दिया। 19 जून के दिन ध्वजारोहण हो रहा था उस समय पूरे मंदिर में अमीवर्षा हुई, सभी भक्तों के जयकारों से प्रभु मंदिर गूंज उठा।

दि. 15 जुलाई को गुरुवर्याश्री के चातुर्मास के मंगल प्रवेश की शोभायात्रा जैन मंदिर से महावीर स्थल, आठ गांव, कुमार पाडा, 7 नम्बर रेल गेट, ए.टी.रोड़, माघखुडा, जेल रोड़ एवं फेंसी बाजार से बाजते गाजते नाचते हुई। हाथी आदि के शकुन के साथ, आसामी नृत्य वालों ने जुलुस की शोभा बढ़ाई। पार्श्व महिला मंडल ने सुसज्जित कलशों द्वारा सामैया किया एवं महावीर भवन में साध्वीजी म. के 34वें दीक्षा वर्ष पर 34 गहुंलियों की सजावट की गई। प्रथम साध्वीश्री को अक्षतों से बधाने का लाभ प्रसन्नचंदजी रवीन्द्रकुमारजी डागा परिवार ने लिया। संगीतकार प्रतिक भाई गेमावत मुंबई से पधारकर सभामंडप को 'गुरुजी अमारो अतंर नाद, अमने आपो आशीर्वाद' के नारों से गुंजा दिया सोने में सुहागा जैसा रंग जमा दिया। गुवाहटी नगर निगम के मेयर मृगेन शरणीय, पार्षद सुनिता भीलवाडिया आदि साध्वीजी के वंदनार्थ पधारी। बाहर से पधारे अतिथियों में कानपुर श्रीसंघ के अध्यक्ष सुबोधभाई, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रतनजी बोथरा दिल्ली, महिला परिषद की अध्यक्षा अंजुजी सेठीया, जालना के अध्यक्ष सुरेशजी, राजस्थान कांकरोली के भूतपूर्व विधायक बंशीलालजी, बैंगलोर से रमेशजी वैद परिवार, जगदलपुर से प्रदीपजी डाकलिया, रायपुर से हेमंत भाई दर्शन, तेजपुर, धुवडी, गोरीपुर, बंगई ग्राम आदि से अनेक महानुभाव पधारे। सभी अतिथियों का संघ की ओर से सम्मान किया गया। प्रेमजी खजांची, पार्श्व महिला मंडल, बालिका मंडल, युवा मंडल, राजेन्द्रजी डाकलिया, संदीप खंजाची, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बसंतजी सुराना, वर्धमान स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष सागरमलजी लुंकड़, साधुमार्गी संघ के अध्यक्ष एवं दिगम्बर जैन पंचायत के अध्यक्ष महावीरजी जैन आदि सभी ने अपने हृदयोगार व्यक्त किये। मंगल प्रवेश के दिन प्रातः नवकारसी का लाभ नरेन्द्रजी सिपानी, स्वामीवात्सल्य का लाभ ऊषाजी अनुपजी बोथरा परिवार, पाद-प्रक्षालन लाभ दिल्ली श्रीसंघ ने लिया। कांबली बोहराने का लाभ ज्योत्सना बेन जसुभाई खाखरा परिवार, गुरुपूजन का लाभ स्मिताबेन पंकजजी सिंघवी परिवार, कान्ति मणि प्रवचन हॉल का लाभ प्रसन्नचंदजी, रवीन्द्रजी डागा परिवार, प्रेम सुलोचना स्वाध्याय कक्ष का लाभ रतनचंदजी ललितजी गोलेच्छा परिवार सिलचर, मणिधारी साधना कक्ष का लाभ अनुपजी ऊषाजी बोथरा, गौतम प्रसादी हॉल का लाभ स्मिताबेन पंकजजी सिंघवी परिवार, जय जिनेन्द्र का लाभ बिशाल गारमेंट्स (कोचर परिवार) एवं चातुर्मास के मुख्य लाभार्थी रत्न स्तम्भ, स्वर्ण स्तंभ, रजत स्तंभ, शुभेच्छु आदि में सभी ने लाभ लिया। चातुर्मास के दौरान विशिष्ट आयोजन जैसे गुरुदेव वंदनावली गुरु भक्त परिवार, पार्श्वनाथ भगवान के 10 भव आयोजन का लाभ स्व. गुलाबचंदजी नरेशकुमारजी कोठारी परिवार, भगवान नेमिनाथ के जन्म कल्याणक का लाभ राजेन्द्रजी कविताजी डाकलिया परिवार, आर्ट आफ लिविंग संस्कार शिविर का लाभ गुरुभक्त, त्रिदिवसीय सरस्वती जाप साधना का लाभ गुरुभक्त परिवार ने लिया। लब्धि निधान गौतम स्वामी तप में अनेक भाई बहन आराधना में जुडकर चातुर्मास को सार्थक कर रहे है।

बालोतरा चातुर्मास में आराधना की धूम

प.पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्रीमज्जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी डॉ. श्री नीलांजना श्रीजी म. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में चातुर्मासिक आराधना के साथ विविध कार्यक्रम अत्यंत ही उल्लास एवं भव्यता के साथ सम्पन्न हो रहे हैं।

पूज्या साध्वी श्री के तात्त्विक आध्यात्मिक-दार्शनिक प्रवचन हृदय को झकझोरने वाले हैं। पूरे बालोतरा नगर में साध्वीजी के प्रबुद्ध प्रवचन चर्चा का विषय बने हुए हैं।

चातुर्मासिक स्थापना के दूसरे ही दिन गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व दिवस पर परम प्रभु गौतम स्वामी के अलौकिक जीवन दर्शन पर प्रवचन हुआ। साथ ही गौतमस्वामी की आराधना के निमित्त सामूहिक गौतम इकतीसा का पाठ व एकासणा की आराधना सकल संघ में सम्पन्न हुई।

इसी शृंखला में साध्वी श्री द्वारा प्रथम रविवार को संयम उपकरण वंदनावलि का संगीतमय कार्यक्रम अतीव उत्साह के साथ आयोजित हुआ। एक-एक उपकरण को बालिकाए विशिष्ट एवं मन मोहक रूप से सजाकर लाई। उन्हीं 13 उपकरणों की बोलियां स्वाध्याय, सामायिक माला, एकासणा, पौषध आदि आराधना के द्वारा लगाई गयी, जिनको लेने के लये धर्मसभा में जैसे होड ही लग गयी।

जीवन में संयम जल्दी से आये, इस भावना को अभिव्यक्त करते हुए आराधकों ने उल्लास भावों से एक-एक उपकरण बोली के द्वारा ग्रहण करते हुए अपने आपको भाग्यशाली बनाया।

संयम वंदनावलि कार्यक्रम में साध्वी श्री की संयम जीवन की महानता-विशिष्टता पर प्रभावीशैली में प्रवचन हुआ। साथ ही एक-एक उपकरण की उपयोगिता बताते हुए उसकी महिमा का संगीत के माध्यम से गान किया। बाल संगीतकार वैभव बाबेल ने भी संयम गीतों के माध्यम से समां बांधकर सभी को मंत्र मुग्ध किया।

प्राचीन चमत्कारी अवंति पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा भव्यता ऐतिहासिकता के साथ सम्पन्न हो, इसे लक्ष्य से 17-18-19 अगस्त को सामुहिक अठ्ठम की आराधना करवायी गयी, जिसमें 116 तपस्वियों ने भाग लेकर बालोतरा में रिकोर्ड बनाया।

अवंति पार्श्वनाथ अठ्ठम आराधना के साथ ही सिद्धसेन दिवाकरसूरि रचित कल्याण मंदिर महापूजन पू. साध्वी श्री की प्रेरणा से सम्पन्न हुआ।

इस महापूजन में 108 जोडों ने एक साथ बैठकर परमात्मा की भक्ति का आनंद लिया। विधिकारक श्री संजयभाई ने मंत्रोच्चारण से, साध्वी श्री ने संगीत के साथ गाथा के गान से तो गौतम चौकसी ने प्रभु भक्ति के भावपूर्ण मधुर गीतों से वातावरण को प्रभुपारसमय बना दिया।

लगातार 5 घंटे तक चले इस महापूजन में मुख्यपीठ पर बैठने का लाभ लिया बाबुलालजी सज्जन राजजी लुणिया परिवार ने, तो प्रभु पार्श्वनाथ की 9 इंच वाली धवलप्रतिमा अपने घर वरघोडे के साथ ले जाने का लाभ लिया महावीरचंदजी जनक कुमारजी चौपडा परिवार ने 12 अगस्त को फेन्सी ड्रेस कोम्पीटेशन में विविध वेशभुषाओं में 35-40 बालक-बालिकाओं ने भाग लेकर अपना विशिष्ट परिचय दिया। 5 से 15 वर्ष के बालकों ने शासनभक्त देशभक्त, राष्ट्रभक्त के रूप में जब अपनी शानदार प्रस्तुति दी तो सारी सभा में आश्चर्य के साथ आनंद की लहरे फैल गयी। दोपहर में खरतरगच्छ गौरव गाथा पुस्तक पर परीक्षा सम्पन्न हुई, जिसमें भी अनेक परिक्षार्थियों ने भाग लिया।

15 अगस्त, श्रावण शुक्ला पंचमी को भ. नेमिनाथ के दिव्य जीवन प्रवचन हुआ, साथ ही स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य भारत के अतीत के उजले इतिहास पर हष्टिपात करते हुए वर्तमान की दुर्दशा पर भी प्रकाश डाला गया। भ. नेमिनाथ के जन्म कल्याणक दिवस पर 14 स्वप्न डेकोरेशन प्रतियोगिता में भी श्राविकाओं ने बडी सस्था ने भाग लिया, प्रथम बार बालोतरा आराधना भवन में तिरंगे झंडे को फहराकर सामुहिकर राष्ट्रगान के द्वारा भारत की पवत्रि संस्कति को वंदना की गयी। इसी दिन खरतरगच्छ की उत्त्पत्ति के इतिहास पर प्रकाश डालने वाली भव्य नाटिका का मंचन युवा-बालक बालिकाओं द्वारा किया गया।, जिसे देखन के लिए बडी संख्या में लोगों का आवागमन हुआ।

इसी शृंखला में चामुहिक सामुहिक सामायिक आराधना व पूणिया श्रावक की नाटिका का आयोजन भी अपने आप में अनूठा रहा। ईद की हिंसा निमित्त सामुहिक आयंबिल आराधना, नवकार महामंत्र ना अखंड जाप, प्रतिशनिवार महिमा शिविर, प्रत्येक रविवार बालक बालिका शिविर एवं सामुहिक एकासणा आराधना आदि विविध कार्यक्रमों से चातुर्मास सफलता का शिखरारोहण कर रहा है।

प्रेषक - अध्यक्ष महावीर चौपडा, बालोतरा

मुंबई में हुआ दादा गुरुदेव का महापूजन

मुंबई 15 अगस्त। मुंबई के कपोलवाड़ी के प्रांगण में श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्वावधान में श्री मणिधारी युवा परिषद् मुंबई द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 15 अगस्त को महाचमत्कारी दादा गुरुदेव के महापूजन का आयोजन किया गया।

गच्छ गणिनी गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वी हेमप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावनकारी निश्रा में आयोजित इस महापूजन में सेंकडों गुरुभक्तों ने लाभ लिया। 54 जोड़ों के साथ महापूजन का विधिविधान कुलदीपभाई ने करवाया।

मुख्य पीठिका का लाभ सांचोर निवासी श्रीमान जीवराजजी उकचंदजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार ने लिया। सभी जोड़ों के चांदी की दादा गुरुदेव के पगलिया युक्त सुंदर मुद्रा प्रदान की गयी।

पूज्य गुरुवर्याजी के मुखारविंद से मंत्रोच्चार युक्त गुरुदेव पूजन से सभी जन मानस भाव विभोर हो गये। कार्यक्रम के पश्चात स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया जिसका लाभ केशवना निवासी श्रीमती आशादेवी सुमेरमलजी श्रीश्रीमाल परिवार ने लिया। सभी लाभार्थी परिवारों का बहुमान करते हुए परिषद् के अध्यक्ष पवनराज श्रीश्रीश्रीमाल ने सभी महानुभावों का आभार प्रकट किया।

-धनपत कानुंगो, मुंबई

121

जहाज मंदिर पहेली 121

मुनि मनितप्रभसागर

पुस्तुत पहेली में दो बॉक्स दिये हैं, जिनमें से एक बॉक्स में माता के नाम एवं दूसरे बॉक्स में उसके पुत्र का नाम है। जिनशासन के गौरवशाली माँ-पुत्रों के नाम Box में हाईलाइट करते हुए रिक्त स्थान में भी अंकित करें। बारह में से कोई भी दस सही।

मृ	ह	कुं	वा	ह	सी	क	कौ
श	द	ती	त्रि	ल	ता	णा	श
धा	रि	णी	दि	श	भी	ढ	ल्या
की	ख	चु	कु	दा	ला	ढं	वा
व	ल	पा	य	स	च	ह	ही
दे	छ	द्रा	हि	भी	ड	नु	ना
मी	भ	हि	री	णी	मा	ज	ज
सु	ना	म	द	न	रे	खा	अं

कु	जि	न	द	त्त	र	जा	धा
श	ज	न	ता	मा	द्र	न	रि
अ	नी	सी	मा	ह	चं	मि	णी
भि	रा	घ	द्	नु	म	र	ना
म	मे	प	मा	मा	हे	जा	ण
न्यु	व	र्ध	मा	न	आं	स	ढ
ग	ज	सु	कु	मा	ल	ना	ढं
ला	य	क	तु	यु	धि	ष्ठि	र

माता का नाम

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....
6. .....
7. .....
8. .....
9. .....
10. .....

पुत्र का नाम

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....
6. .....
7. .....
8. .....
9. .....
10. .....

नोट :- उत्तर झेरॉक्स पर लिखकर जहाज मंदिर कार्यालय के पत्ते पर पोस्ट करें।
साथ में नाम-पता-मोबाईल नंबर भी लिखें।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

घटाशंकर अपने दोस्त जटाशंकर के घर गया था।

काफी दिनों बाद मिले थे। बातों का प्रवाह तीव्र गति से चल रहा था।

आधा घंटा बीता था कि जटाशंकर रसोई घर में गया। घटाशंकर ने सोचा कि मेरे लिये चाय पकोड़ों का प्रबन्ध करने गया होगा।

जटाशंकर दो मिनट बाद वापस आ गया।

चाय पकोड़ों की प्रतीक्षा में घटाशंकर अपनी बातों को और लम्बी कर रहा था। आधा घंटा बीता कि जटाशंकर फिर भीतर गया। घटाशंकर ने ध्यान से देखा तो पाया कि वह अन्दर जाता है। एक डिब्बा खोलता है। उसे देखता है। और बंद करके वापस आकर बैठ जाता है।

घटाशंकर विचार में पड़ गया– मैंने तो सोचा था कि कुछ नाश्ते की व्यवस्था होगी। पर यह तो यों ही जाता है और वापस आ जाता है। उसे डिब्बा खोलने, देखने और बंद करने के पीछे का राज समझ में नहीं आया।

फिर आधा घंटा बीता कि जटाशंकर अन्दर गया। तीन घण्टे में छह बार अन्दर चला गया। और कोई नया काम नहीं करता। वही डिब्बा खोलना, देखना, फिर बंद करना और आ जाना। डिब्बा भी दूसरा नहीं!

आखिर उसने पूछ ही लिया– तुम बार–बार अन्दर जाकर क्या देख कर आते हो!

जटाशंकर बड़ी ही मासूमियत से बोला– डॉक्टर ने हर आधे घंटे में शुगर चेक करने का कहा है। इसलिये अन्दर जाकर शुगर चेक करके आता हूँ। उस डिब्बे में शक्कर है, बस वही देखकर आता हूँ।

घटाशंकर उसकी मूर्खता पर खिलखिला कर हँस पडा।

यदि स्वस्थ रहना है तो डॉक्टर के निर्देश को पहले अच्छी तरह समझो फिर उसका पालन करो। ठीक इसी प्रकार हमें परमात्मा की आज्ञा को अच्छी तरह समझना है और फिर उसका पालन करना है। तभी हम स्वस्थ अर्थात् आत्म–स्थ हो सकते हैं।

श्री अमृतलालजी कटारिया श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, मुंबई के अध्यक्ष बने

मुंबई 2 सितंबर। श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, मुंबई के सर्वसम्मति से चुनाव संपन्न हुए। श्री अमृतलालजी कटारिया सिंघवी को अध्यक्ष चुना गया। वे पूर्व में संघ के महामंत्री रह चुके हैं।

मुंबई खरतरगच्छ संघ के विधान व परम्परानुसार तीन वर्ष के कार्यकाल के पश्चात् चुनाव संपन्न किया जाता है। अध्यक्ष पुनः निर्वाचित नहीं होता। श्री प्रकाशजी कानुंगो के प्रस्ताव पर सभी ने सर्वसम्मति से समर्थन किया। इस संघ की स्थापना से लेकर अभी तक श्री प्रकाशजी कानूंगो, श्री पुखराजजी छाजेड, श्री भंवरलालजी छाजेड, श्री मांगीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, संघवी श्री बाबुलालजी मरडिया अध्यक्ष पद को सुशोभित कर चुके हैं। आगामी 16 सितंबर को तपस्वियों के अभिनंदन के लिए वरघोडा, बहुमान एवं नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का शपथग्रहण समारोह आयोजित किया गया है। तपस्वियों के बहुमान समारोह में स्वामीवात्सल्य का लाभ भी श्री कटारियाजी को प्राप्त हुआ है।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से श्री कटारियाजी को बहुत बहुत बधाई।

हार्दिक अनुमोदना

संकलेचा परिवार की गृहलक्ष्मी

श्रीमती ललितादेवी धर्मपत्नी **ललित कुमार संकलेचा**

के **सिद्धितप** की उग्र तपस्या की

हम शाता पूछते हुए तप और तपस्वी की

भूरी-भूरी अनुमोदना करते हैं

तपस्वी नौ जय जयकार

तपस्वी नौ जय जयकार

शुभेच्छु

श्रीमती मोहनीदेवी भंवरलालजी (सास-ससुर)

राजकुमार-संगीतादेवी, कैलाशकुमार,

गौतमचन्द-शिल्पादेवी (देवर-देवरानी)

मनीषकुमार-सोनुदेवी, मिशाल कुमार (पुत्र-पुत्रवधु)

निकिताबाई-नवीनकुमारजी बाफना (पुत्री-जंवाई)

रुचिका, काजोल, ईशिता (पुत्री), प्रित बाफना (दौहित्र),

पिहर पक्ष : श्रीमती सुआदेवी पुनमचन्दजी छाजेड़ (माता-पिता)

भवानी देवी पुखराजजी छाजेड़ (भाई-भाभी)

एवं समस्त परिवार

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

झाबक ट्रेक्टर्स
संकेत झाबक
मो. 93023-14042

झाबक इम्पलीमेंटस
संजोग झाबक
मो. 95757-93000

अलाईड ट्रेडर्स
संदीप झाबक
मो. 82250-50888

ओटोमोबाईल एवं ट्रैक्टर पार्ट्स के होलसेल एवं रिटेल विक्रेता

झाबक बाड़ा, कमासी पारा, तात्यापारा चौक के पास
रायपुर (छ.ग.) 492001

विनीत

मोतीलाल, गौतमचन्द, सम्पत लाल, कमलेश कुमार
संदीप, संजोग, संकेत एवं समस्त झाबक परिवार

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, शिवगंज रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408